जय-तिथि-पत्रक

श्री वीर-निर्वाण संवत्
२५३८-२५३९
विक्रम संवत् २०६९

तेरापंथ संवत्
२५२-२५३
ईस्वी सन् २०१२-२०१३

सम्पादक : 'मंत्री मुनि' मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

जैन विश्व भारती
लाडनूं 341306 (राजस्थान)
दूरभाष : 01581-222025, 224671, 222080, फैक्स : 01581-223280
email : jainvishvabharati@yahoo.com, Visit us at : www.jvbharati.org

₹10

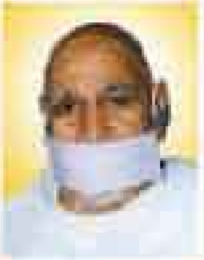

जिसका मन, वाणी और कर्म धर्म से ओत-प्रोत हो, वही भगवान् का सच्चा भक्त है।

– आचार्य तुलसी

कष्ट सहन करने का अभ्यास जीवन की सफलता का परम सूत्र है।

– आचार्य महाप्रज्ञ

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

सोहनलाल वी. धाकड़

मेघराज, अजीत, हार्दिक धाकड़

एवं समस्त धाकड़ परिवार

सिसोदा (राजस्थान) – विले पार्ले(पूर्व) मुंबई

www.jvbharati.org

खोए हुए धन को परिश्रम से पुनः प्राप्त किया जा सकता है,
विस्मृत ज्ञान को पुनः याद किया जा सकता है,
अस्वस्थ शरीर को दवा आदि के द्वारा पुनः स्वस्थ बनाया जा सकता है,
किन्तु बीते हुए क्षण को पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता।

- आचार्य महाश्रमण

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

मंगल ग्रुप ऑफ कम्पनीज

• मंगल इन्टरनेशनल लिमिटेड • श्री मंगल ज्वेल्स प्रा.लि. • स्वर्ण मंगल ज्वेल्स
• मंगल टीम्बर प्रा.लि. • मंगल ब्युल्ट होम प्रा. लि. • धाकड़ प्रोपर्टीज एण्ड फाइनेंशियल सर्विसेज प्रा. लि.
• श्री रत्न मंगल ज्वेल्स प्रा. लि. • मंगल ज्वेलर्स

श्रद्धावनत

सोहनलाल वी. धाकड़ परिवार - सिसोदा-विले पार्ले (पूर्व) मुम्बई

www.jvbharati.org

जय भिक्षु   अर्हम्   जय महाश्रमण

भावभरा आमंत्रण
जसोल चातुर्मास-2012

A
कॉटेज (ईंटों) - दो कमरे (12x10 व 12x10) एक लॉबी (7x8) टॉयलेट, बाथरूम सहित
उपलब्ध सुविधा - पलंग 2, कैर 2, बिस्तर सेट 2, बाल्टी-मग एवं दैनिक समाचार पत्र
निर्धारित राशि - 55,000/- रु. (5 चातुर्मास काल 5 व्यक्तियों तक)

C
कॉटेज (ईंटों) - एक कमरा (12x10) एक लॉबी (7x8) टॉयलेट, बाथरूम सहित
उपलब्ध सुविधा - पलंग 1, बिस्तर सेट 3, बाल्टी-मग एवं दैनिक समाचार पत्र
निर्धारित राशि - 35,000/- रु. (चातुर्मास काल 3 व्यक्तियों तक)

B
कॉटेज (ईंटों) - दो कमरे (ईंटों) (15x10 वातानुकूलित) व (10x10) एक लॉबी (7x8) टॉयलेट, बाथरूम सहित
उपलब्ध सुविधा - पलंग 2, कैर 2, बिस्तर सेट 4, बाल्टी-मग एवं दैनिक समाचार पत्र
निर्धारित राशि - 81,000/- रु. (चातुर्मास काल 5 व्यक्तियों तक (विद्युत खर्च सहित)

D
कॉटेज (चटाई) - एक कमरा (12x10) एक लॉबी (7x8) टॉयलेट, बाथरूम सहित
उपलब्ध सुविधा - पलंग 1, बिस्तर सेट 3, बाल्टी-मग एवं दैनिक समाचार पत्र
निर्धारित राशि - 21,000/- रु. (चातुर्मास काल 3 व्यक्तियों तक)

E
कक्ष - ईंट कमरा (12x10) कॉमन टॉयलेट, बाथरूम
निर्धारित राशि - 51/- प्रतिदिन

F
कक्ष - चटाई कमरा कॉमन टॉयलेट, बाथरूम
निर्धारित राशि - 41/- प्रतिदिन

आचार्य श्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति, जसोल

Email : info@terapanthjasol.com • Web.: www.terapanthjasol.com

गौतम सालेचा, संयोजक 09414108229 | जसराज बुरड़, अध्यक्ष 09376724969 | शान्तिलाल भंसाली, महामंत्री 09414107727 | शीतलचन्द लुंकड़, प्रभारी, आवास व्यवस्था 09928015829

www.jvbharati.org

प्रकाशकीय

जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय द्वारा विगत ३४ वर्षों से मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर जय-तिथि-पत्रक का प्रकाशन प्रतिवर्ष निरंतर किया जा रहा है। इसी क्रम में १४९वें मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर संवत् २०६९ का जय-तिथि-पत्रक सुधी पाठकों के हाथों में प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता है। जय-तिथि-पत्रक में ज्योतिषीय सूचनाओं, विशेष पर्वों, महत्त्वपूर्ण दिवसों व अनुष्ठानों के साथ-साथ संस्थाओं एवं विभिन्न संघीय गतिविधियों, कार्यक्रमों आदि से संबंधित उपयोगी सामग्री प्रकाशित की गई है।

परमाराध्य आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार तेरापंथ दर्शन मनीषी 'मंत्री मुनि' मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' ने जय-तिथि-पत्रक संपादन के गुरुत्तर दायित्व का सम्यक् निर्वहन करते हुए दैनंदिन आवश्यकता की ज्योतिषीय सूचना-सामग्री प्रस्तुत करने की कृपा की है, हम मंत्री मुनिश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। मुनिश्री उदितकुमारजी के महनीय मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। श्री जीतमल नाहटा, कोलकाता का सामग्री संकलन कार्य में सहयोग प्राप्त हुआ, तदर्थ हार्दिक आभार। समण संस्कृति संकाय के विभागाध्यक्ष श्री रतनलाल चौपड़ा के अथक श्रम, दिशा-निर्देशन एवं सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

जय-तिथि-पत्रक के प्रकाशन के लिए हमें अनेक महानुभावों का आर्थिक सौजन्य प्राप्त हुआ है। उनका उदार सहयोग-भाव संस्था की प्रवृत्तियों को गतिशील रखने में योगभूत बनता है। सभी अनुदानदाताओं के प्रति हम हार्दिक आभार ज्ञापित करते हैं। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में सहयोगी सभी महानुभावों के सहयोग हेतु आभार।

विश्वास है कि जय-तिथि-पत्रक की सामग्री सभी उपयोगकर्ताओं के लिए महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी तथा इसमें प्रस्तुत सामग्री से उपयोगकर्ता त्याग-प्रत्याख्यान के लिए प्रेरित होंगे।

पन्नालाल पुगलिया
निदेशक, समण संस्कृति संकाय

०१ दिसम्बर, २०११

सुरेन्द्र चोरड़िया
अध्यक्ष, जैन विश्व भारती

www.jvbharati.org

इतिहास के आलोक में आमेट

आमेट नगर की स्थापना

अरावली की सुरम्य घाटियों के बीच स्थित राजस्थान के राजसमन्द जिले का एक प्रमुख कस्बा आमेट, जिसकी नींव लगभग १३०० वर्ष पूर्व अम्बाजी पालीवाल ने रखी। इस भूमि पर सघन आम्रकुंजों के कारण इस गांव का नाम अम्बापुर (आमेट) पड़ा। व्यावसायिक दृष्टिकोण से आमेट में कपास, किराणा, कपड़ा और रेडीमेड वस्त्रों का वृहद् स्तर पर कारोबार हुआ करता था। वर्तमान में मार्बल व्यवसाय एवं उच्च स्तर की संगमरमर खानें (माइन्स) विश्व में प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में चुण्डावतों का शासन रहा। इन्हीं के वंशजों में जयमल (जग्गा) और पत्ता जैसे अनूठे वीर हुए जिन्होंने मेवाड़ के शौर्य और वीरता के गौरव की अभिवृद्धि की। यहां के राजा जयसिंहजी बड़े धार्मिक और अटूट श्रद्धा के धनी पुरुष थे। कहा जाता है कि उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर श्री चारभुजानाथ चामत्कारिक रूप में धरती के गर्भ से प्रकट हुए, वहां भगवान जयसिंह श्यामजी का प्रसिद्ध मन्दिर है। राव शिवनाथसिंहजी बड़े प्रभावी राजा हुए जिनके शासन काल में आमेट साहित्य, कला एवं संस्कृति का प्रमुख केन्द्र बना। यहां क्षत्रिय, ब्राह्मणों और जैनों की बहुत बड़ी संख्या शुरू से रही है जो आज भी कायम है। भगवान जयसिंह श्याम मन्दिर के साथ प्राचीन भगवान पार्श्वनाथ जैन मन्दिर, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ भवन, वेवर महादेव मन्दिर, संत आशारामजी आश्रम, शिवनाल में भगवान शिव मन्दिर, तेजस्विता का प्रतीक शिव मन्दिर का त्रिशूल, एक हजार से अधिक वर्ष पहले के पाटन शहर स्थित जैन मन्दिर के अवशेष विद्यमान है। आज भी जैन मन्दिर के प्रत्येक प्रस्तर खण्ड पर शिव त्रिशूल चित्र उकेरा हुआ है। इससे प्रतीत होता है कि शैव और जैन संस्कृति के साथ गहरा तालमेल रहा था।

शीतला माता मन्दिर (शोमाता), कोटेश्वरी महादेव बलिदानी पन्नाधाय की विवाहिता भूमि (कमेरी) जिन्होंने मेवाड़ की आन बान के लिए अपने बेटे चन्दन का सर्वस्व त्याग किया आदि अनेक धार्मिक, प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है। कस्बे की बनावट पुरानी है, पर लक्ष्मीबाजार, जवाहरनगर, चारभुजा रोड, मण्डी में सैंकड़ों दुकानें आकर्षक हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या ८ पर केलवा एवं गोमती चौराया से बीस किलोमीटर की दूरी पर अन्दर स्थित है। यहां का रेलवे स्टेशन चारभुजा रोड के नाम से जाना जाता है।

आमेट का जैन समाज

यहां जैन समाज के लगभग ७०० परिवार हैं। जिनमें से ४५० से अधिक तेरापंथी हैं, शेष स्थानकवासी, मूर्तिपूजक एवं दिगम्बर सम्प्रदाय के है। यहां तेरापंथ सभा भवन, स्थानकवासी महावीर भवन, मूर्तिपूजक जैन उपासरा व जैन मन्दिर है। एक ओसवाल भवन भी है।

आमेट और तेरापंथ

तेरापंथ की दृष्टि से मेवाड़ में तेरापंथ की राजधानी कहलाने वाला आमेट कस्बा कई विशेषताओं से लिए जाना जाता है। वि.सं. १८३५ में तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु ने प्रथम चातुर्मास प्रवास किया। १८६६ में द्वितीय आचार्यश्री भारमलजी स्वामी ने चातुर्मास किया। चतुर्थ आचार्य जयाचार्य का मुनि रूप में मुनिश्री हेमराजजी स्वामी के साथ १८७८ में चातुर्मास तथा

www.jvbharati.org

१८८३ में शेषकाल में विराजना हुआ। आचार्यश्री मघवागणी का १९४३ में, आचार्यश्री डालगणी का १९५९ में, आचार्यश्री कालूगणी का १९७२ व १९९२ में आमेट में पदार्पण हुआ। गुरुदेव श्री तुलसी १९९२ में आचार्यश्री कालूगणी के साथ पधारे। वि.सं. २०१७ में आचार्यश्री तुलसी ने तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के अंतर्गत मर्यादा महोत्सव आमेट में करवाया। गुरुदेव ने वि.सं. २०१९ व वि.सं. २०३९ में आमेट पधारे।

वि.सं. २०४२ का ऐतिहासिक पांच मासिक अमृत महोत्सव चातुर्मास यहीं सम्पन्न किया। आचार्यश्री तुलसी का चातुर्मास व अमृत महोत्सव का दूसरा चरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा जिसकी अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियां रहीं है।

उन दिनों पंजाब राज्य में चल रहे अलगाववादी आंदोलन से राष्ट्रीय एकता को जबर्दस्त चुनौती मिल रही थी। उस समय आचार्यश्री तुलसी की प्रेरणा से यह सकारात्मक परिणाम निकला कि आंदोलनकारी संत लोंगोवाल एवं श्री सुरजीतसिंहजी बरनाला समाधान की किरण खोजते हुए अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी के चरणों में समुपस्थित हुए। लगातार तीन दिन तक समझाईस, प्रेरणा और हृदय परिवर्तन के समाधायक सूत्रों के जरिए प्रयास चलता रहा। आखिरकार संत लोंगोवाल ने श्री राजीव गांधी से बातचीत करना स्वीकार किया और एक संकल्प पत्र भर कर शान्ति के लिए हस्ताक्षर किए। गुरुदेव तुलसी को संत लोंगोवाल ने विश्वास दिलाया कि तुरन्त पंजाब में शान्ति और अमन चैन का प्रयास करूंगा। अपने अनुयायियों की ओर से कोई खून खराबा नहीं होने दूंगा। गुरुदेव की प्रेरणा रंग लाई और ऐतिहासिक राजीव-लोंगोवाल समझौता अमल में आया। देश को एक सुकून मिला। इससे प्रभावित होकर तत्कालीन केन्द्रीय गृहमंत्री श्री शंकरराव चव्हाण को भारत सरकार की ओर से आभार व्यक्त करने के लिए प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने आमेट भेजा। कार्यक्रम में गृहमंत्री द्वारा आचार्यश्री तुलसी के प्रति आभार प्रकट किया गया।

अमृत महोत्सव के सुअवसर पर आमेट में श्री तुलसी अमृत विद्यापीठ की स्थापना हुई जहां वर्तमान में एक हजार से अधिक विद्यार्थी (अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम) से अध्ययनरत हैं। वि.सं. २०४७ में होली चौमासा आचार्यश्री तुलसी ने आमेट में करवाया। वि.सं. २०६१ में आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं युवाचार्यश्री महाश्रमण अपनी धवल वाहिनी के साथ यहां पधारे।

आमेट शहर से बाहर अखाड़ा के महंत जयरामदासजी महाराज तेरापंथ धर्मसंघ के बड़े अनुकूल रहे। अग्निपरीक्षा पुस्तक विवाद में सकारात्मक सोच प्रस्तुत कर सामाजिक एकता को बल दिया। वर्तमान में सीतारामदासजी महाराज की भी वैसी अनुकूलता धर्मसंघ के साथ जुड़ी हुई है।

धर्मसंघ की प्रभावना और आमेट

आमेट में सबसे पहले तेरापंथ धर्मसंघ की श्रद्धा स्वीकार करने वाले अमरोजी डांगी एवं उनका परिवार था। वहां चन्दूबाई कोठारी एक विलक्षण श्राविका हुई, जिसका नाम धर्मसंघ के इतिहास मे स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है। इसी आमेट के कई भाई, बहिनों ने दीक्षित होकर संयम यात्रा पूरी की। मुनि गुमानजी, मुनि रूपचन्दजी, मुनि दीपचन्दजी मुनि भीमराजजी, मुनि हीरालालजी, मुनि नवलरामजी, साध्वी मगदूजी, साध्वी विरधाजी, साध्वी जीतूजी, साध्वी जोताजी, साध्वी जड़ावांजी, साध्वी कस्तूरांजी, साध्वी सिणगारांजी, साध्वी चूनाजी, साध्वी चांदाजी, साध्वी हगामाजी बड़े ही दिग्गज संत-साध्वी हुए है। मुनि मोहनलालजी एक निर्भीक एवं संघ समर्पित कर्मठ संत हुए। वर्तमान में मुनि तत्त्वरुचिजी धर्मसंघ में साधनारत है। साध्वी दीपांजी ने अपनी सहयोगिनी साध्वियों के सह एक साथ

www.jvbharati.org

छहमासी तप पूरा किया। इतिहास की यह विरल घटना रही। मुनि नथमलजी (रिछेड़) ने अत्यन्त प्रभावशाली ६६ दिन का संलेखना-संथारा परिसंपन्न किया। साध्वी भूराजी ने वि.सं. २०१८ में १४ माह २१ दिन में महाभद्रोत्तर तप पूरा किया। मुनि नथमलजी (रिछेड़), मुनि गणेशमलजी, साध्वी भूरांजी, साध्वी रत्नाजी, साध्वी केसरजी (लाडनूं) का आमेट में महाप्रयाण हुआ। साध्वी केसरजी मंत्री मुनि सुमेरमलजी की संसारपक्षीय ज्येष्ठ भगिनी थी।

विशिष्टता एवं आमेट

श्रावक समाज में भी अनेक प्रबुद्ध एवं तत्त्वज्ञ श्रावक-श्राविकाएं हुए है जिनमें श्री चतुर्भुज हिरण, श्री फूलचंद बम्ब, श्री मांगीलाल कोठारी, श्री कजोड़ीमल बोहरा, श्री नन्दलाल मेहता, श्री अम्बालाल बम्ब, श्री शेषमल पामेचा प्रमुख है। इस धरती पर कई भाई-बहिनों ने अनशन स्वीकार कर अपनी जीवन यात्रा पूरी की इनमें श्री भंवरलाल बम्ब, श्रीमती वनिताबाई चोरड़िया, श्रीमती गट्टूबाई बम्ब, श्रीमती केशरबाई डांगी एवं श्रीमती लेहरीबाई बापना ने पण्डित मरण का वरण किया।

आमेट से कई प्रतिभाएं देश एवं विदेश में कार्यरत है। अपनी धरती से दूर रहकर भी धर्म प्रभावना में सदैव जुड़े हुए हैं। इनमें चेन्नई, कर्नाटक के विभिन्न क्षेत्रों, मुंबई, सूरत आदि दूरदराज क्षेत्रों में प्रतिष्ठित व्यापारिक प्रतिष्ठान स्थापित कर रखे है। धर्म प्रभावना में वे भी अग्रसर है।

आमेट शहर

यहां मार्बल एवं फेल्सफार की सैंकड़ों खानें है। लगभग तीन सौ से अधिक कल कारखानें है। कुम्भलगढ़ विधानसभा के दो उपखण्ड मुख्यालय में से एक मुख्यालय आमेट है। तहसील कार्यालय, नगरपालिका, न्यायपालिका, पंचायत समिति, पुलिस थाना, राजकीय चिकित्सालय, राजकीय महाविद्यालय, रेलवे स्टेशन, (चारभुजा रोड़), राजकीय उच्च माध्यामिक, उच्च प्राथमिक व प्राथमिक विद्यालय एवं आई. टी. आई कालेज आदि सरकारी अर्धसरकारी अनेक शिक्षण संस्थान कार्यरत है।

आमेट का अतीत और वर्तमान अत्यन्त गौरवशाली रहा है। आमेट की प्रमुख विशेषता यह भी है कि लोगों में सौहार्दपूर्ण भावना उल्लेखनीय है। आचार्य परम्परा में आचार्यश्री भिक्षु से ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण की आमेट क्षेत्र पर सदैव कृपा रही है। आचार्यों की असीम अनुकंपा के कारण लगभग हर वर्ष पावस प्रवास मिलता रहा है।

आमेट की पुण्य धरा का सौभाग्य है कि तेरापंथ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण का मर्यादा महोत्सव इस धरती पर हो रहा है। मेवाड़ की अहिंसा यात्रा ऐतिहासिक यात्रा हुई है। पूरे मेवाड़ में उत्सव, उमंग एवं उल्लास का माहौल निर्मित हुआ है। शुभ संयोग है कि आचार्य तुलसी का अमृत महोत्सव मेवाड़ में चार चरणों में सम्पन्न हुआ जिसका दूसरा चरण आमेट में सम्पन्न हुआ। पुनः एक ऐसा संयोग निर्मित हुआ कि आचार्यश्री महाश्रमण का अमृत महोत्सव तीन चरणों में मेवाड़ में सम्पन्न होने जा रहा है जिसका तृतीय चरण आमेट में आयोजित हो रहा है। यह आमेटवासियों के लिए विशेष गौरव का विषय है। आचार्यश्री की कृपादृष्टि इस क्षेत्र पर सदा बनी रहे। आपके आशीर्वाद से क्षेत्र का भविष्य उज्ज्वल रहे। आमेट का संपूर्ण श्रावक समाज गुरु चरणों में श्रद्धानत और समर्पित है।

निवेदक

आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति

आमेट (राजसमन्द) राजस्थान

www.jvbharati.org

इतिहास प्रसिद्ध नगर (जसवल) जसोल

१. मालाणी का मुकुट है, मिनख बड़ा अनमोल।
धर्म क्षेत्र या शौर्यता, जग-जबरो जसोल।।
२. सिद्ध-पुरुष मल्ली-धणी, माटी रो हद मोल।
संत धरा आ मरुधरा, जग में जबर जसोल।।

राजस्थान की मरुधरा मालाणी का मुकुट जसोल अपनी ढेर सारी विशेषताएं समेटे हुए ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं, वरन् वर्तमान एवं सुखद भविष्य की कल्पनाओं से लबरेज, आसावल ग्राम आज जसवल या जग प्रसिद्ध जसोल नगर के रूप में तब्दील हो चुका है। मरुधरा में होते हुए भी नैसर्गिक प्राकृतिक सौन्दर्य समेटे हुए एक से बढ़कर एक अध्यात्म-पुरुषों तथा वीर-पुरुषों की जन्मदात्री जसोल नगरी आज विश्व प्रसिद्ध नगरी बन चुकी है।

गौरवमय इतिहास एवं बसावट एक तरफ उत्तुंग-पहाड़ी एवं दूसरी ओर बहती लूनी नदी केवल वास्तु की दृष्टि से ही उत्तम नगर नहीं, किन्तु यहां का उद्गम ही तप एवं त्याग की नींव पर हुआ है अतः ये रत्न-गर्भा धरा कई योगियों, मुनियों, वीरों और सिद्ध-पुरुषों की गर्भजा वसुंधरा रही। इस नगर के एक छोर पर (महज ६-७ कि.मी. पर) पुरातन मंदिर रणछोड़ राय का खेड़ में है तो दूसरे छोर पर महेवा नगर (नाकोड़ा जी) का प्रसिद्ध जैन तीर्थ श्री पार्श्वनाथजी एवं श्री भैरूजी का विशेष चमत्कार लिए हुए है। एक सिरे पर ब्रह्माजी का प्रसिद्ध मंदिर ब्रह्मधाम है तो उस सिरे पर तिलवाड़ा मल्लीनाथ का पुराना मंदिर है। स्वयं जसोल में राणी भटियाणी का मंदिर देश-विदेश के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। लगभग २०१० साल पहले 'आसावल नगर' के रूप में बसा ग्राम जो बाद में यशोवलम् या जसोल के नाम से पुकारा जाने लगा। इस नगर को रावल मल्लीनाथजी ने बसाया था जो स्वयं बाद में संन्यासी बन गये और सिद्ध पुरुष के नाम से प्रख्यात हो गये। धोरीनाथजी का मंदिर पहाड़ी की चोटी पर बना हुआ, आज भी उस बात का मूक-दर्शक है। यहां के वीर जगमालजी ने मुस्लिम शासक अल्लाउद्दीन खिलजी की विशाल सेना से डटकर मुकाबला किया था। यह उक्ति आज भी प्रसिद्ध है-

हाथ-हाथ तलवार है, हर हाथ में ढाल।
बीबी पूछे बादशाह ने, जग में कितरा जगमाल।।

वर्तमान में नगर की छवि

व्यापारिक दृष्टि से कपड़ा उद्योग एवं रंगाई-छपाई का यह प्रसिद्ध क्षेत्र (जसोल-बालोतरा) केवल देश के प्रत्येक राज्य में तैयार माल की यह सप्लाई ही नहीं करता, अपितु विदेश में निर्यात भी होता है तथा किसी समय में यहां की जट पट्टी (बकरी के बालों) का व्यवसाय भी देश-विदेश में प्रसिद्ध था। यहां की क्रीमीलेयर के रूप में देश के वित्त मंत्री व रक्षा मंत्री रह चुके श्री जसवंतसिंहजी

www.jvbharati.org

'जसोल' विपक्ष में सदन में नेता भी रहे है। यहां से विधायक श्री माधोसिंहजी एवं रावल अमरसिंहजी भी रह चुके हैं। वर्तमान में यहां के रावल श्री किशनसिंहजी कस्टम कलेक्टर के रूप में अपनी स्वच्छ व निर्मल छवि के रूप में प्रसिद्धि पा चुके हैं एवं यहां से कई व्यक्ति अधिवक्ता, जज, प्रोफेसर, इंजिनियर, डॉक्टर के रूप में देश-विदेश में अपनी सेवा दे रहे हैं। यहां के लिए जनोक्ति भी प्रसिद्ध है कि जसोल का तो 'भाटा-भाटा वकील' है।

जसोल नगर का उज्ज्वल एवं सुखद भविष्य–वैसे व्यापारिक दृष्टि से, धार्मिक दृष्टि से, सांस्कृतिक दृष्टि से जसोल का भविष्य उज्ज्वल एवं सुखद लगता है। धार्मिक दृष्टि से तो अणुव्रत अनुशास्ता गुरुदेव श्री तुलसी के शब्दों में 'यह बड़ी उर्वरा भूमि है' के रूप में कही गई बात शत-प्रतिशत सत्य लग रही है।

जैन धर्म का इतिहास–नगर की पहाड़ी की तलहटी में निर्मित शिखर बंद जैन मंदिर यहां के समृद्ध जैनियों की सं. १३९० के पूर्व की गौरव गाथा कह रहा है। मंदिर का शिलालेख आज भी साक्षी दे रहा है एवं उस पर लिखा हुआ नाम भी 'आसावल नगर' अंकित है। यहां तपागच्छ एवं खरतर गच्छ के स्वतंत्र उपासरे मानों यहां के जैनियों की आस्था एवं समृद्धि का बयान कर रहे हैं। यहां कई यति, मुनि आए एवं अपने-अपने धर्म का प्रचार-प्रसार किया। फिर स्थानकवासी या बाईस टोले वाले संतों एवं सतियों के आवागमन से कई परिवार उस पर श्रद्धा रखने लगे।

तेरापंथ का इतिहास–फिर तेरापंथ के द्वितीय आचार्यश्री भारमलजी सर्वप्रथम जसोल पधारे एवं अपनी वाग्धारा से जनमानस को अध्यात्म सिंचन दिया। चतुर्थाचार्य जीतमलजी (जयाचार्य) ने वि. सं. १८९० में एवं सं. १९२१ में पुनः पधार कर धर्मोद्योत किया। जयाचार्य के समय में जसोल की भक्ति व संघ श्रद्धा के कई कीर्तिमान बने। लगभग उस समय पूरा नगर श्रद्धाशील बन गया था।

१. यहां की प्रथम दीक्षा ऋषिराय के शासन काल में मुनि कपूरजी की हुई। उसके बाद में कई व्यक्ति धर्मसंघ में दीक्षित हुए। यहां की साध्वी धन्नाजी से उग्र तपस्या, लघुसिंह निष्क्रीड़ित तप करके कीर्तिमान बनाया। आचार्यश्री कालूगणी के कर कमलों से वि.सं. १९६६ में मुनिश्री पूनमचंदजी की हुई एवं यहां के मुनिश्री गुणेशमलजी ने अपने पूरे परिवार सहित दीक्षा ली थी एवं मुनिश्री गुणेशमलजी एवं जीवनमलजी अत्यन्त बलिष्ठ एवं अप्रमत्त साधक रहे। मुनिश्री सिरेमलजी बड़े ही सरल अप्रमत्त एवं संघ-निष्ठ रहे। आचार्यश्री तुलसी के करकमलों से मुनिश्री जिनेशकुमारजी छोटी अवस्था में भी किसी बहकावे में न आकर अपने से बड़े संतों (जो बाद में बहिर्भूत हो गये) को छोड़कर अपनी संघ निष्ठता का परिचय दिया। अभी उनके हाथों से दो-दो दीक्षाएं हुई है। मुनिश्री यशवंतकुमारजी की दीक्षा आचार्यश्री महाश्रमणजी के कर कमलों से युवाचार्य अवस्था में सर्वप्रथम दीक्षा हुई। यहां के मुनिश्री पृथ्वीराजजी ने १६ दिन की तपस्या में दीक्षा ली। यहां के मुनिश्री कीर्तिकुमारजी एवं विश्रुतकुमारजी आचार्यश्री की अनवरत सेवा में हैं। जसोल की तेरह साध्वियां एवं तीन समणीजी धर्मसंघ में सेवा दे रहे हैं। वर्तमान में सात मुमुक्षु बहनें, कई उपासक-उपासिकाएं धर्मसंघ में सेवाएं दे रहे हैं।

www.jvbharati.org

२. एक बार मुनिश्री जीतमलजी कच्छ की यात्रा संपन्न कर जसोल पधारे एवं क्षुधा परिषह के कारण सहवर्ती मुनि साथ आने में असमर्थ थे अतः अकेले ही नगर में पधारे, लम्बी यात्रा एवं थकान से वे पहचान में नहीं आए और एकल विहारी मुनि समझ कर आगे जाओ (धक्के जाओ)...कह कर उदासीन हो गये। फिर यथास्थिति मालूम पड़ने पर सबने क्षमा याचना की एवं गोचरी, पानी तथा ठहरने के लिए निवेदन किया। बाद में जसोल वालों की श्रद्धा का उदाहरण देकर एवं सराहना कर उपालंभ नहीं, अपितु पुरस्कृत किया।

३. जयाचार्य के दर्शनार्थ जाने हेतु यहां की श्राविका सुखी बाई सालेचा (मुनिश्री गुणेशमलजी की दादी) ने अपने परिवार से बगावत कर, अपने बच्चों का बंटवारा कर, साठ श्राविकाओं के साथ जाकर दर्शन किये। (फिर घर में सामंजस्य हो गया।)

४. जसोल के ही श्रावक मानजी भंसाली एक बार सामायिक में बैठे थे उनके सुपुत्र जुहारजी (बाल्यावस्था में) पास में बैठे थे, अचानक भरभरा कर छज्जा गिर गया, बच्चे जुहारजी उसके नीचे आ गये, ऐसी स्थिति में समता रखनी कठिन होती है पर उन्होंने चिंतन किया, अगर मेरे बच्चे का आयुष्य होगा तो कुछ बिगड़ेगा नहीं और अगर आयुष्य पूर्ण हो गया है तो कुछ उपाय भी नहीं। ऐसे चिन्तन में सामायिक पूरी की। उसे आधुनिक समय में पूणिया श्रावक की सामायिक कही जा सकती है। सामायिक की पूर्णता पर देखा तो जुहारमलजी (बालक) के कुछ नहीं हुआ। हुआ यूं कि एक खंभा इस तरह गिरा कि बच्चे के ऊपर ढाल सी बन गई और मामूली चोट के अतिरिक्त उनका बाल भी बांका नहीं हुआ। इन्हीं मानजी को भीखणजी स्वामी पर प्रगाढ़ श्रद्धा थी। एक बार उनको भयंकर विषधर (सर्प) ने काट लिया फिर भी उन्होंने भीखणजी का स्मरण करना नहीं छोड़ा और अपनी पगड़ी की पट्टी फाड़ कर भीखणजी के नाम की पैर के बांध दी और कार देते हुए कहा– 'अगर विष इससे ऊपर चढ़ा तो भीखणजी की आण है।' एकाएक चमत्कार हुआ और विष आगे नहीं बढ़ पाया और बिना दवा-दारू या झाड़ा-झपटा के एकदम स्वस्थ हो गये।

ऐतिहासिक संथारे– यहां के प्रभावक संथारों में श्रीमती झमकूदेवी का ५८ दिन का, श्रीमती रमकूदेवी (साध्वी रमणीयप्रभा) का १८ दिन का एवं संथारे में मुनि सुखलालजी के द्वारा दीक्षित हुई श्रीमती धन्नीदेवी बुरड़ का ७८ दिन का संथारा प्रशंसनीय है।

विशिष्ट श्रावक– यहां के कई शासन भक्त एवं ख्याति प्राप्त श्रावक-श्राविकाएं हुए हैं। यहां तीन तेरापंथ भवन, दो ओसवाल भवन, एक जैन विद्यालय भवन (ढेलड़िया परिवार द्वारा) एवं एक पारस भवन है। यहां जैन श्रावकों ने दो विद्यालय (बोहरा एवं भंसाली परिवार द्वारा) एवं एक अस्पताल (कोठारी परिवार द्वारा) निर्मित कर सरकार को अर्पित किये हैं। यहां का साम्प्रदायिक सौहार्द अनूठा है। यहां ज्ञानशाला, संस्कार निर्माण शिविर नियमित लगते हैं। यहां की हर कौम में आचार्यश्री महाश्रमण के पधारने का इंतजार एवं उल्लास का वातावरण है एवं इस चातुर्मास में कई कीर्तिमान बनेंगे ऐसी आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है।

www.jvbharati.org

॥ अर्हम् ॥

तेरापंथ के ११वें अधिशास्ता, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री
महाश्रमणजी की 'अहिंसा यात्रा' के संदेश को आत्मसात् करें।
स्वस्थ एवं सुखी परिवार निर्माण की परिकल्पना
को ठोस आधार देने में सहभागी बनें।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के अलभ्य अवसर पर

श्रद्धावनत

श्रीमती गुलाबदेवी - बाबूलाल गोलछा
श्रीमती सुशीलादेवी - कमल किशोर गोलछा
एवं समस्त गोलछा परिवार

रतनगढ़ - शिलोंग - दिल्ली

सम्पर्क सूत्र : 09999114372, 09311734371, 09311019288

बाबूलाल कमल किशोर गोलछा

ए-359, प्रथम तला, सूर्य नगर, पोस्ट - चन्द्रनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.) - 201011

अहिंसा व्यक्ति की मौलिक चेतना है।

– आचार्य महाप्रज्ञ

With Best Compliments From

RHJ

Rameshkumar Hamerlal Jain

TOTAL METAL RECYCLERS & MFG. METAL SALT

Head Office

111/119, Thakurdwar Road, Mumbai - 400 002

Tel. : 022-22013540, 22058973, 22069972

Fax : 022-22004579

E-mail : rhj@bom3.vsnl.net.in/dhakad@mtnl.in

ASSOCIATE CONCERNS

RHJ Extrusion Private Limited

(AN ISO 9001-2000 Certified Company)

RHJ Tubes Pvt. Ltd.

RHJ Metals Pvt. Ltd.

Raja Zinc Pvt. Ltd.

Dhakad Metals Pvt. Ltd.

Dhakad Metal Corporation

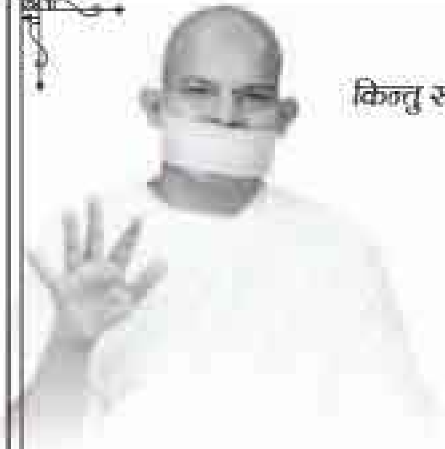

दूसरी कीमती चीजें यदि खो जाए तो उन्हें दुबारा प्राप्त किया जा सकता है,
किन्तु समय एक ऐसी चीज है, जिसे खोने के बाद दुबारा कभी नहीं पाया जा सकता।
– आचार्य महाश्रमण

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के 'भिक्षु भूमि' सिरियारी (राजस्थान)
पदार्पण के पावन अवसर पर शत-शत वंदन-अभिनंदन

श्रद्धावनत

स्व. वस्तीमलजी-सारीबाई एवं ताराचंदजी छाजेड़ की
पुण्य स्मृति में मनोहर, 'शासनसेवी' मांगीलाल-विमला देवी,
शांतिलाल, संजय-मंजु, मनीष-मीना, नवीन-चेतना छाजेड़
सिरियारी - बैंगलोर

शा. मांगीलाल शांतिलाल एण्ड कम्पनी, बैंगलोर
महाप्रज्ञ सिल्क पैलेस, बैंगलोर

www.jvbharati.org

कैलाश जितने ऊंचे सोने और चांदी के असंख्य पर्वत भी मनुष्य की आकाश जितनी इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकते।

– भगवान महावीर

मनुष्य की शक्ति और धन की ईच्छा दूसरों के लिए वेदना का कारण बनती है।

– भगवान् बुद्ध

हिंसा को तब तक नहीं मिटाया जा सकता जब तक परिग्रह के प्रति हमारी आसक्ति समाप्त नहीं होती।
परिग्रह का सीमाकरण होने पर हिंसा की समस्या स्वतः समाहित हो जाएगी।

– आचार्य तुलसी

हिंसा का मूल स्रोत है पदार्थ के प्रति मूर्च्छा।
पदार्थ की आसक्ति जितनी गहरी होगी हिंसा उतनी ही सघन होती चली जायेगी।

– आचार्य महाप्रज्ञ

भलाई का काम करो, भगवान की सच्ची भक्ति हो जायेगी। तुम्हें अच्छी शक्ति मिल जायेगी।

– आचार्य महाश्रमण

सादर नमन

एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन

४१/१ सी, झाउतल्ला रोड कोलकाता - ७०००१९

www.jvbharati.org

प्रेक्षाध्यान

प्रेक्षाध्यान : एक परिचय

प्रेक्षाध्यान हमारे प्राचीन ग्रंथों, आधुनिक विज्ञान और अनुभव का समन्वय है। प्रेक्षाध्यान हमारे विचारों और चेतना को शुद्ध करने का अभ्यास है तथा आत्म-साक्षात्कार की एक प्रक्रिया है। प्रेक्षाध्यान के अभ्यास के द्वारा हम अपने स्वभाव, व्यवहार और व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं। सरल शब्दों में प्रेक्षा का अर्थ है 'अपने आपको देखना, अपने शरीर, मन और आत्मा के सूक्ष्म स्पन्दनों को राग-द्वेष से मुक्त होकर केवल देखना और जानना।'

सन् 1970 में पुनः संरचित ध्यान की विधा 'प्रेक्षाध्यान' गणाधिपतिश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ के अथक परिश्रम का प्रतिफल है। भगवान महावीर ने अपने साधना काल में ध्यान के जिन प्रयोगों का अभ्यास किया था, आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने 20 वर्षों तक शोध और अभ्यास कर प्रेक्षाध्यान के अंतर्गत उन्हें व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया। प्रेक्षाध्यान जाति, धर्म, रंग और लिंग के भेदभाव के बिना किसी भी व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है। प्रेक्षाध्यान पद्धति सहज, सरल और बिना किसी कठिनाई के सीखी जा सकती है।

देश-विदेश में प्रेक्षाध्यान के हजारों शिविर एवं सेमिनारों का आयोजन हो चुका है। विभिन्न संस्कृतियों से जुड़े लगभग लाखों लोगों ने इसके प्रयोगों का अभ्यास कर आंतरिक परिवर्तन का अनुभव किया है। नियमित अभ्यास से और निखरने वाला यह प्रयोग आज मानव जीवन के लिए वरदान सिद्ध हो रहा है।

प्रेक्षाध्यान की निष्पत्ति क्या है ?

प्रेक्षाध्यान की मुख्य निष्पत्ति है-चित्त की शुद्धि। हमारे जीवन में संतुलन, आनन्द और शांति का अनुभव उपलब्ध कराने में प्रेक्षाध्यान प्रमुख भूमिका निभाता है। मानसिक तनावों से मुक्ति, ऊर्जा के रूपान्तरण, चेतना के ऊर्ध्वारोहण और एकाग्रता के विकास के लिए प्रेक्षाध्यान वास्तव में जीवन का वरदान है। व्याधि, आधि और उपाधि को समाप्त करने वाला प्रेक्षाध्यान समाधि का प्रवेश द्वार है। इसके साथ-साथ विभिन्न रोगों के उपचार के लिए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग लाभदायक हैं। इस संदर्भ में विशद जानकारी तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा 'प्रेक्षाध्यान' मासिक-पत्र का प्रकाशन सन् 1978 से नियमित हो रहा है।

प्रेक्षाध्यान शिविर में ध्यान के विभिन्न प्रयोग, योगासन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा, मंत्र ध्यान आदि के प्रयोग करवाये जाते हैं।

शांति और अध्यात्म के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए अपनी चेतना के ऊर्ध्वारोहण के लिए यही क्षण है निर्णय लेने का।

क्या आप तैयार हैं........

-: विशेष जानकारी के लिए संपर्क :-

प्रेक्षा फाउण्डेशन
तुलसी अध्यात्म नीडम्
जैन विश्व भारती, लाडनूं - 341306
फोन नं. : 01581-222119,222025
मो. 9667234398
E-mail : needam@preksha.com
Website : www.preksha.com

www.jvbharati.org

अध्यात्म ऊर्जा का केन्द्र : जैन विश्व भारती

विश्व इतिहास में मानव संस्कृति को सार्थक दिशा देने वाले महापुरुषों में क्रांतिकारी द्रष्टा, विश्वसंत गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के स्वप्नों की साकार प्रतिमान जैन विश्व भारती की स्थापना शिक्षा, शोध साधना एवं सेवा के विशेष उद्देश्यों के साथ सन् 1970 में राजस्थान के नागौर जिले के लाडनूं नगर में हुई। जैन विश्व भारती अहिंसा और शांति का अनुपम सांस्कृतिक केन्द्र है। शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय इन सात महान प्रवृत्तियों को अपने आप में समेटे हुए यह संस्था तपोवन का रूप ले चुकी है और यहां के प्रकंपन यह इंगित दे रहे हैं कि यह प्राचीन काल से कोई तपोभूमि रही है। तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता आचार्य महाश्रमणजी के आध्यात्मिक संरक्षण व निर्देशन में संस्था निरंतर गतिशील है।

शिक्षा

जैन विश्व भारती की स्थापना जिन उद्देश्यों को लेकर हुई थी उनमें से एक मुख्य प्रवृत्ति है-शिक्षा। इस उद्देश्य की पूर्ति यहां प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक समस्त शैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। जैन विश्व भारती के तत्त्वावधान में वर्तमान में विमल विद्या विहार सीनियर सेकेण्डरी स्कूल तथा महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर एवं टमकोर संचालित हैं। मातृ संस्था जैन विश्व भारती के संरक्षण में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय से अब तक लगभग 45,000 विद्यार्थियों ने शिक्षा प्राप्त की है जिनमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने उच्च पदों पर पहुंच कर संस्था का गौरव बढ़ाया है।

भावी पीढ़ी में संस्कारों के संरक्षण तथा आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के विकास की दृष्टि से **'समण संस्कृति संकाय'** के अंतर्गत जैन विद्या की शिक्षा प्रदान की जाती है।

मनुष्य के बौद्धिक विकास के साथ मानसिक, भावनात्मक और चारित्रिक विकास हेतु आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने **'जीवन विज्ञान'** की परिकल्पना प्रस्तुत की। ध्यान, योग एवं शिक्षण प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षा का यह क्रांतिकारी प्रयोग जैन विश्व भारती के अंतर्गत **'केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी'** द्वारा साकार हो रहा है।

सेवा

शिक्षा के साथ-साथ सेवा के क्षेत्र में भी जैन विश्व भारती अग्रणी है। जैन विश्व भारती परिसर में **'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला'** तथा बीदासर में **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र'** सुचारु रूप से संचालित हैं।

'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला' द्वारा चिकित्सा सेवा विषयक जन-कल्याणकारी प्रवृत्ति का संचालन किया जाता है। यहां जिन औषधियों का निर्माण होता है वे आयुर्वेद विभाग से प्राप्त ड्रग मैन्युफैक्चरिंग लाइसेन्स के अंतर्गत जी.एम.पी. प्रमाणित हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा, एक्युप्रेशर एवं फिजियोथैरेपी पद्धति से रोगियों की चिकित्सा हेतु **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी मानव कल्याण केन्द्र'** की स्थापना जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में बीदासर में की गई। यहां आधुनिक उपकरणों द्वारा व्यायाम की सुविधा उपलब्ध है। वर्तमान में केन्द्र के अंतर्गत होमियोपैथिक चिकित्सा से रोगियों को स्वास्थ्य लाभ दिया जा रहा है।

साधना

प्रेक्षाध्यान- आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा प्रवृतित निर्देशित प्रेक्षाध्यान पद्धति के निरंतर प्रयोग, प्रशिक्षण एवं शोध का केन्द्र है जैन विश्व भारती स्थित- **'तुलसी अध्यात्म नीडम्'**, जहां योग एवं अध्यात्म साधना के अभ्यास एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति के भाव परिष्कार व संवेग परिवर्तन के प्रयोग होते हैं। सन् 1978 में स्थापित तुलसी अध्यात्म नीडम् का उद्देश्य है-प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण, विकास एवं अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करना।

www.jvbharati.org

अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका 'प्रेक्षाध्यान' का विगत 31 वर्षों से जैन विश्व भारती के अंतर्गत तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है।

साहित्य

साहित्य प्रकाशन एवं वितरण-साहित्य प्रकाशन एवं वितरण जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन विद्या, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान आदि से संबंधित साहित्य के साथ आचार्य भिक्षु, श्रीमद् जयाचार्य, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण एवं साधु-साध्वियों, समण-समणीवृंद तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित/सम्पादित साहित्य का प्रकाशन विगत लगभग 39 वर्षों से किया जा रहा है। जैन विश्व भारती गत 2-3 वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अन्य प्रकाशकों के साथ मिलकर भी साहित्य प्रकाशन व वितरण का कार्य कर रही है।

शोध

जैन विश्व भारती की स्थापना के उद्देश्यों में शोध का विशेष स्थान है। पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने इसकी स्थापना के उद्देश्यों में जैन धर्म एवं दर्शन के उच्च-स्तरीय शोध संस्थान की परिकल्पना सामने रखी थी। उसी परिकल्पना की सुखद परिणति स्वरूप जैन विश्व भारती की शोध प्रवृत्ति के अंतर्गत आगम सम्पादन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है। यह कार्य पूर्व में आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशन में चल रहा है। आगम सम्पादन के प्रबन्धन का सारा दायित्व जैन विश्व भारती द्वारा निर्वहन किया जा रहा है।

हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग-जैन विश्व भारती में अनेक प्राचीन एवं दुर्लभ जैन हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनकी सुरक्षा एवं संरक्षण जैन विश्व भारती के हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग के अंतर्गत किया जा रहा है।

समन्वय

पुरस्कार एवं सम्मान-जैन विश्व भारती द्वारा कुल 10 पुरस्कारों का संचालन विभिन्न प्रायोजकों के सहयोग से किया जा रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार, आचार्य तुलसी अनेकान्त सम्मान, आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार, संघ सेवा पुरस्कार, जय तुलसी विद्या पुरस्कार, आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान, महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषी पुरस्कार, जीवन विज्ञान पुरस्कार, गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार आदि पुरस्कारों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएं देने एवं उल्लेखनीय कार्य करने वालों को प्रोत्साहित किया जाता है और उनकी प्रतिभा का सम्यक् मूल्यांकन किया जाता है।

संस्कृति

तुलसी कलादीर्घा-जैन विश्व भारती में स्थित तुलसी कलादीर्घा (आर्ट गैलरी) में जैन धर्म को दर्शाने वाली प्राचीन एवं अर्वाचीन चित्रों एवं हस्तकलाओं की प्रचुर सामग्री का संग्रह किया गया है। दुर्लभ, कलापूर्ण, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व की प्रदर्शन योग्य सामग्री के साथ तेरापंथ के आचार्यों को सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से संबंधित प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र एवं अन्य सामग्री को यहां पर शो विंडो में कलापूर्ण ढंग से सुसज्जित किया गया है।

उक्त सभी गतिविधियों के साथ सुरम्य हरीतिमा से सुशोभित परिसर जैन विश्व भारती के बाह्य सौन्दर्य की मुखर कहानी कह रहा है। जैन विश्व भारती परिवार आप सभी को सादर आमंत्रित करता है। आप यहां पधारें एवं यहां संचालित गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें। संस्था के विकास हेतु आपके अमूल्य सुझावों एवं विचारों का स्वागत है। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें-

जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन : (01581) 222025/80, फैक्स : 223280
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com
वेबसाईट : www.jvbharati.org

www.jvbharati.org

नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान

दुनिया में शक्ति का महत्व होता है। शक्तिहीन व्यक्ति अपने आप में रिक्तता अनुभव करता है। कभी-कभी शक्तिविहीन मनुष्य अपने आपको दयनीय और असहाय भी अनुभव करता है। सबसे बड़ी शक्ति आध्यात्मिक शक्ति होती है। अन्य शक्तियों का भी अपना-अपना महत्व होता है।

गुरुदेवश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का एक नया उपक्रम प्रारंभ किया। आचार्यश्री महाश्रमण के निर्देशन में वह उसी रूप में विधिवत् चल रहा है। उसका उद्देश्य है- आत्मशुद्धि और ऊर्जा का विकास। उसकी कालावधि आश्विन शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की निर्धारित की गई है। चैत्र शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की कालावधि में भी इसकी आराधना की जा सकती है। संपूर्ण विधि एवं समय सारिणी इस प्रकार निश्चित की गई है-

प्रातः ९.३० से १०.००

'चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' - का पांच बार पाठ
चंदेसु निम्मलयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु - का तेरह बार पाठ
आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु-का तेरह बार पाठ
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु - का तेरह बार पाठ
आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु - का तेरह बार पाठ
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु - का इक्कीस बार पाठ
'चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।' - का पांच बार पाठ

ॐ ह्रीं क्लीं श्र्वीं

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रसं।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ॥२॥
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥३॥
वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोई उवहम्मई।
अहागडेसु रीयंति, पुप्फेसु भमरा जहा ॥४॥
महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ॥५॥–का सात बार पाठ

प्रातः १०.०० से १०.३०-आध्यात्मिक प्रवचन

मध्याह्न २.३० से ३.१५ आगम पाठ का स्वाध्याय।

(दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि आदि के मूल पाठ का स्पष्ट व शुद्ध उच्चारण एवं व्याख्या)

www.jvbharati.org

पश्चिम रात्रि–४.४५ से ५.३०

उवसग्गहरं पासं (उपसर्गहर स्तोत्र) आदि पांच श्लोक एवं 'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण' का नौ बार पाठ। फिर 'विघन हरण' का जप।

उपसर्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं ।।१ ।।
विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ।।२ ।।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ।।३ ।।
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपायवब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।।४ ।।
इह संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ।।५ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण पास
विसहर वसह जिण फुल्लिंग ह्रीं श्रीं नमः ।।

विघनहरण

विघनहरण मंगलकरण, स्वाम भिक्षु रो नाम।
गुण ओलख सुमिरण करै, सरै अचिंत्या काम ।।

जप और आगम-स्वाध्याय के साथ तप का योग भी आवश्यक माना गया है। तप में एकासन, आयंबिल, षड्विगय वर्जन, पंच विगय वर्जन और दस प्रत्याख्यान में से किसी एक तप की आराधना इस अवधि में की जाए। व्यक्तिगत इच्छा के अनुसार नौ दिनों तक एक ही तप अथवा वैकल्पिक तप की आराधना की जा सकती है।

निर्धारित कालावधि और करणीय क्रम को यथावत् रखते हुए स्थानीय सुविधानुसार समय में परिवर्तन भी किया जा सकता है। साधु-साध्वियों की भांति श्रावक-श्राविकाएं भी इसमें संभागी बन सकते हैं। संभागी श्रावक-श्राविकाओं के लिए निम्नांकित नियम भी अनुष्ठान काल में पालनीय हैंह

ब्रह्मचर्य का पालन, रात्रि भोजन-विरमण (चौविहार/तिविहार), जमींकंद का वर्जन।

अनुष्ठान का प्रारंभ प्रथम दिन प्रातः ९.३० से यानी प्रातःकालीन सत्र में किया जाए एवं अनुष्ठान का समापन रात्रि के ५.३० बजे यानि रात्रिकालीन सत्र में किया जाए।

www.jvbharati.org

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के शुभ पावन अवसर पर
शत-शत वन्दन-अभिवन्दन

जसराज बुरड़ (M) 09374724969

अध्यक्ष
आचार्य श्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति, जसोल 2012

J K Burad Offset (India) Pvt. Ltd.

· New Horizon, New Dimension ·
"J K House" Plot No. 26 to 33, Shreeji Industrial Estate,
Raipur Mill Compound, Saraspur, AHMEDBAD - 380018 (INDIA)
Ph : 079-22774732, 22774734, Mob. : 09374724969
website : jkburad.com, E-mail : mail@jkburad.com

www.jvbharati.org

आनंद जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

— आचार्य महाप्रज्ञ

सही दिशा में शक्ति का नियोजन करने वाला
व्यक्ति ही सफलता प्राप्त करता है।

— आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

सुआ बाई-ताराचंद लूंकड़
अमरचंद, धरमचंद लूंकड़
राणावास - चेन्नई

www.jvbharati.org

विषय-प्रवेश

कोष्ठक विवरण

जय-तिथि-पत्रक का पहला कोष्ठक अंग्रेजी दिनांक का है और फिर वार का है। उसके बाद तिथि का कोष्ठक है। उसके आगे के दो कोष्ठक में क्रमशः इतने बजे व मिनट तक का संकेत है। छठा कोष्ठक नक्षत्र का है। सातवें व आठवें में नक्षत्र के कितने बजे व मिनट तक का सूचन है। नौवें व दसवें में क्रमशः सूर्योदय व सूर्यास्त कितने बजे होता है इसका निदर्शन है। सूर्योदय व सूर्यास्त लाडनूं को केन्द्र मानकर स्टेण्डर्ड टाइम में दिया गया है। ग्यारहवें कोष्ठक में प्रथम प्रहर कितने बजे आती है तथा बारहवें कोष्ठक में दिन का एक प्रहर कितने घंटे व मिनट का होता है, इसका दिग्दर्शन है। तेरहवें कोष्ठक में चन्द्रमा तथा चौदहवें कोष्ठक में विशेष विवरण के अंतर्गत योग तथा भद्राकाल है। ये भी बजे व मिनट के क्रम से हैं।

तिथि-पत्रक में बजे-मिनट रेलवे समय-सारिणी पद्धति से दिये गये हैं। मध्य रात्रि में १२ बजे से रेलवे समय सारिणी के अनुसार २४ बजे होता है, के बाद ०० समय से शुरू कर २४ बजे तक २४ घंटे मानते हुए चलता है। जैसे-चैत्र शुक्ला प्रतिपदा २२/०२ बजे है। इसका तात्पर्य है-यह तिथि उस दिन २२ बजकर ०२ मिनट तक है। अर्थात् रात्रि में १० बजकर ०२ मिनट तक है। वैशाख कृष्णा द्वितीया १७/३१ बजे है। इसका अर्थ है यह तिथि उस दिन सायं ५ बजकर ३१ मिनट तक रहेगी। इसी तरह चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र १२/३६ बजे है। अर्थात् उस दिन दोपहर १२ बजकर ३६ मिनट तक है।

तिथि व नक्षत्र के बजे-मिनट बराबर में हैं। वे बजे, मिनट से स्पष्ट हैं। चंद्रमा के आगे संख्या ऊपर नीचे हैं। चंद्रमा के ऊपर वाली संख्या बजे व नीचे वाली मिनट है। जैसे-चैत्र शुक्ला द्वितीया को चंद्रमा मेष राशि में १५/१३ अर्थात् मध्याह्न ३ बजकर १३ मिनट पर मेष राशि में प्रवेश करेगा। चंद्रमा के लिए इतना विशेष है कि उसका प्रवेश काल दिया है। विशेष विवरण स्पष्ट है। इसमें योग व अन्य के आगे संख्या बराबर में हैं।

तिथि, नक्षत्र आदि के साथ जहां शून्य (०) अंकित है, वह उस दिन 'पूरे दिन और पूरी रात' है अर्थात् वह तिथि या नक्षत्र उस दिन सूर्योदय से पूर्व शुरू हो गया और दूसरे दिन सूर्योदय होने के बाद तक रहा। वह समय अगले दिन की पंक्ति में है। जैसे-चैत्र शुक्ला सप्तमी को आर्द्रा नक्षत्र के आगे (०) अंकित है जिससे यह नक्षत्र पूरे दिन-रात है। चैत्र शुक्ला पंचमी (प्रथम) के आगे (०) अंकित है अर्थात् यह तिथि पूरे दिन-रात है।

सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय होने के ठीक पहले तक का समय ''रात्रि समय'' और उसके बाद ''दिवा समय'' होता है।

विशेष विवरण के कोष्ठक में प्रदत्त योगों के सांकेतिक अक्षरों में पूर्ण नाम इस प्रकार हैं :-

- र.-रवि योग (शुभ व कुयोगनाशक)
- अ.-अमृत सिद्धि योग (शुभ)
- राज.-राजयोग (शुभ)
- कु.-कुमार योग (शुभ)

www.jvbharati.org

● सि.-सिद्धि योग (शुभ)
● मृ.-मृत्यु योग (अशुभ)
● व्या.-व्याघात योग (अशुभ)
● वै.-वैधृति (अशुभ)
● व्य.-व्यतिपात योग (अशुभ)
● ज्वा.-ज्वालामुखी योग(अशुभ)
● पं.-पंचक (अशुभ) घास, लकड़ी एकत्र करने, घर की छत बनाने, दक्षिण यात्रा करने में वर्जित।
● भ.-भद्राकाल (शुभ-अशुभ दोनों)
● यम.-यमघंट योग (अशुभ)

नोट : शास्त्रीय मान्यता है कि मध्याह्न के पश्चात् अशुभ योगों का दोष नहीं रहता।

भद्रा-काल

श्रेष्ठ कार्यों में भद्रा-काल होना वर्जित है, किन्तु शास्त्रकारों ने भद्रा को शुभ भी माना है, जो इस प्रकार है-मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक के चंद्रमा में भद्रा का वास स्वर्ग में रहता है। यह भद्राकाल शुभ और ग्राह्य है।

कन्या, तुला, धनु और मकर के चन्द्रमा में भद्रा का वास नागलोक (पाताल) में रहता है। यह भद्राकाल भी लक्ष्मीदायक-धनदायक होने से शुभ है।

कुंभ, मीन, कर्क और सिंह के चंद्रमा में भद्रा का वास मृत्युलोक में होता है। यह अशुभ है, इसलिए शुभ कार्यों में सर्वथा वर्जनीय है।

भद्राकाल समय-विशेष के साथ शुभ भी बताया है।

शुक्ल पक्ष की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और कृष्ण पक्ष की भद्रा सर्पसंज्ञक है। मतान्तर से रात्रि की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और दिन की भद्रा सर्पसंज्ञक है। सर्पसंज्ञक भद्रा के मुख की पांच घटी (२ घंटा) और वृश्चिक संज्ञक भद्रा की पुच्छ की तीन घटी (१ घंटा १२ मि.) शुभ कार्य में त्याज्य है।

तिथि-पत्रक के विवरण पृष्ठों के बाद कोलकाता, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बैंगलोर व जोधपुर-इन छह शहरों के महीने की पहली व पन्द्रहवीं तारीख के सूर्योदय व सूर्यास्त का समय दिया गया है।

समय-सारिणी के बाद नक्षत्र के नाम का अक्षर और राशि की तालिका है। फिर राशि स्वामी एवं गुरु दर्शन के नक्षत्र हैं। फिर घातचक्र है। इसके बाद यात्रा में चंद्र विचार, योगिनी विचार चक्र, दिशाशूल विचार चक्र तथा काल-राहु विचार चक्र है। इससे अगले पृष्ठ पर सुयोग-कुयोग चक्र है। अंतिम पृष्ठ पर पोरसी प्रमाण, राहुकाल, दिन एवं रात्रि के चौघड़िये हैं।

चौघड़िया-अवलोकन

दिन का चौघड़िया सूर्योदय से प्रारंभ होता है तथा रात्रि का चौघड़िया सूर्यास्त से प्रारंभ होता है। एक दिन में आठ चौघड़िये व रात्रि में आठ चौघड़िये होते हैं।

चौघड़िया का काल दिन-रात छोटे-बड़े होने के अनुसार न्यूनाधिक होता रहता है। प्रत्येक दिन के सूर्योदय से सूर्यास्त तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने पर जो एक भाग प्राप्त होगा वह उस दिन में एक चौघड़िया का मान होगा, अर्थात् दिन की समयावधि का आठवां हिस्सा एक चौघड़िया होता है। इसी प्रकार सूर्यास्त से अगले सूर्योदय तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने से प्राप्त होने वाला एक हिस्सा रात्रि के चौघड़िये का मान होता है। अर्थात् रात्रि की समयावधि का आठवां हिस्सा रात्रि का एक चौघड़िया होता है।

चौघड़िये में उद्वेग, काल और रोगइये तीन अशुभ हैं। शेष तीन लाभ,

www.jvbharati.org

अमृत और शुभ-ये चौघड़िये श्रेष्ठ होते हैं। शुक्र के अर्थात् चल (चंचल) वेला के चौघड़िये को भी अच्छा मानते हैं। श्रेष्ठ चौघड़िये में सभी कार्य करने प्रशस्त हैं। अमृत का चौघड़िया सभी शुभ कार्यों में अत्युत्तम है।

इस तिथि-पत्रक में लाडनूं को केन्द्र मानकर सूर्योदय एवं सूर्यास्त दिया गया है। उससे पूर्व दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट पहले सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। उससे पश्चिम दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट बाद में सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। लाडनूं अक्षांश २७°-४०", उत्तर पर है। रेखांश ७४°-२४" पूर्व है। अयनांश २३° १७'-१८" रेखांतर ३२ मिनट २० सैकिण्ड है। वेलान्तर-२ मिनट ३२ सैकिण्ड है। पलभा ६-१० है।

धार्मिक उपासना में पर्व तिथियों का अपना महत्त्व होता है। पक्खी आदि का प्रतिक्रमण तिथि के आधार पर करना पड़ता है। पहले इसे 'पक्खी' के नाम से संत तैयार करते थे। उसे हर सिंघाड़े (ग्रुप) को एक-एक दे दिया जाता था, बाद में 'लघु-पंचांग' के नाम से श्री हनूतमलजी सुराणा (चूरू) छपाने लग गये। परमाराध्य गुरुदेव व आचार्यवर की दृष्टि से पिछले कई वर्षों से इसका संपादन संतों द्वारा होने लगा। 'लघु पंचांग' के बाद 'जय पंचांग' के रूप में सामने आया। सन् १९८४ से इसका संपादन मेरे द्वारा होने लगा। वर्तमान में यह **'जय-तिथि-पत्रक'** के नाम से प्रकाशित हो रहा है।

६ नवम्बर २०११ — मुनि सुमेर (लाडनूं)

महाप्रज्ञ भवन, केलवा

विशेष अवगति

वर्ष के दिन-इस वर्ष मास १३, पक्ष २६, तिथि क्षय १८, तिथि वृद्धि १२, कुल दिन ३८४

गाज बीज की अस्वाध्याय नहीं-आषाढ़ शुक्ला २, गुरुवार, दिनांक २१ जून २०१२ से आश्विन शुक्ला ९, मंगलवार, दिनांक २३ अक्टूबर २०१२ तक।

चंद्रग्रहण- (i) इस वर्ष भारत में कोई चंद्रग्रहण नहीं।

सूर्यग्रहण- (i) ज्येष्ठ कृष्णा ३०, रविवार, दिनांक २० मई २०१२

मलमास-(i) वर्ष-प्रारंभ से वैशाख कृष्णा-८, शुक्रवार, दिनांक १३ अप्रैल २०१२ तक रहेगा। यह पिछले वर्ष चैत्र कृष्णा-७, बुधवार, दिनांक १४ मार्च २०१२ से प्रारंभ हो चुका था।

(ii) मार्गशीर्ष शुक्ला-३, शनिवार, दिनांक १५ दिसम्बर २०१२ से प्रारंभ, पौष शुक्ला २, रविवार, दिनांक १३ जनवरी २०१३ को संपन्न।

(iii) फाल्गुन शुक्ला ३, गुरुवार, दिनांक १४ मार्च २०१३ से प्रारंभ, अगले वर्ष में चलेगा।

तारा- (१) गुरु अस्त-पिछले वर्ष चैत्र कृष्णा-८, शनिवार, दिनांक २ अप्रैल २०१२ से प्रारंभ, वैशाख कृष्णा ७, रविवार, दिनांक २९ अप्रैल, २०१२ को संपन्न।

(२) शुक्र अस्त-(i) ज्येष्ठ शुक्ला १३, शनिवार, दिनांक २ जून २०१२ से प्रारंभ, आषाढ़ कृष्णा ८, सोमवार, दिनांक ११ जून २०१२ को संपन्न।

(ii) माघ शुक्ला १२, शुक्रवार, दिनांक २२ फरवरी २०१३ से प्रारंभ, अगले वर्ष में चलेगा।

नोट-ग्रहण, मलमास तथा गुरु, शुक्र के अस्तकाल में विशिष्ट शुभ कार्य वर्जनीय हैं।

www.jvbharati.org

विशेष ज्ञातव्य

(क) विशेष मुहूर्त

(१) अभिजित मुहूर्त, (२) रवियोग, (३) अमृत का चौघड़िया

(४) दीपावली का प्रदोषकाल (सूर्यास्त से दो घड़ी-४८ मिनट तक)

(५) पुष्य नक्षत्र के साथ रविवार या गुरुवार सदा श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु-पुष्य विवाह में वर्जित है।

(ख) यात्रा के लिए आवश्यक

(१) यात्रा-कर्ता की जन्म-राशि से यात्रा दिन का चंद्रमा चौथे, आठवें में स्थित न हो। पंचांग में घातचक्र में दिये गये चंद्रमा को भी टालें। (जन्म-राशि ज्ञात न होने से प्रचलित नाम राशि)।

(२) यात्रा के समय सम्मुख चंद्रमा हो तो सब दोष नष्ट माने जाते हैं। पूर्व दिशा में जाने के लिए मेष, सिंह, धन का चंद्रमा, पश्चिम में मिथुन, तुला और कुंभ का, दक्षिण में वृष, कन्या, मकर का और उत्तर में कर्क, वृश्चिक और मीन का चंद्रमा सम्मुख रहता है। दाहिना चंद्रमा भी शुभ है।

(३) यात्रा-योग न मिलने पर अमृत का चौघड़िया अथवा अभिजित मुहूर्त सदैव ग्राह्य है। बुधवार को अभिजित शुभ नहीं।

(४) राहु काल-कुवेला का समय वर्जनीय है।

(५) मृत्यु योग आदि अशुभ योग वर्जनीय है।

(ग) यात्रा के लिए अन्य ज्ञातव्य

(१) सोमवार और शनिवार को पूर्व में, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम में, मंगलवार और बुधवार को उत्तर में तथा गुरुवार को दक्षिण में यात्रा न करें, क्योंकि दिशाशूल रहता है।

(२) उषाकाल में पूर्व में, गोधूलिकाल में पश्चिम में, मध्याह्न में दक्षिण में तथा मध्य रात्रि में उत्तर में यात्रा न करें, क्योंकि समयशूल रहता है।

(३) ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्व को, पूर्वाभाद्रपद में दक्षिण को, रोहिणी में पश्चिम को तथा उत्तराफाल्गुनी में उत्तर को यात्रा न करें, क्योंकि नक्षत्र-शूल रहता है।

(४) धनिष्ठा का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती को पंचक कहते हैं। इन दिनों में दक्षिण की ओर यात्रा वर्जनीय है।

(५) तिथियां ४,६,८,९,१२,१४,३० और शुक्ल पक्ष की एकम यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(६) भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति और विशाखा नक्षत्र यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(७) अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती यात्रा में विशेष शुभ नक्षत्र माने जाते हैं।

(८) उत्तर में २,१०; दक्षिण में ५,१३; पूर्व में १,९; पश्चिम में ६,१४ तिथियों में योगिनी रहती है। योगिनी के सामने या दाहिने होने पर यात्रा वर्जनीय है।

(९) पूर्व में शनिवार को, पश्चिम में मंगलवार को, उत्तर में रविवार को

www.jvbharati.org

तथा दक्षिण में गुरुवार को यात्रा का निषेध है क्योंकि काल-राहू सम्मुख रहता है।

(१०) शनिवार और बुधवार को ईशान कोण (पूर्वोत्तर) में, मंगलवार को वायव्य (पश्चिमोत्तर) में, रविवार, शुक्रवार को नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) में तथा सोमवार, गुरुवार को आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में विदिशाशूल है अतः यात्रा में वर्जनीय है।

दिशा-शूल परिहार- रवि को तांबूल, सोम को चंदन, मंगल को मट्ठा, बुध को पुष्प, गुरु को दही, शुक्र को घृत व शनि को तिल खाकर या देकर यात्रा करने में दिक्शूल-दोष मिटता है।

शकुन- यात्रा के समय लोहा, तेल, घास, मट्ठा, पत्थर, लकड़ी, बिलाव मिले तो अशुभ व दही, चावल, चांदी का घड़ा, पुष्प, हंस तथा मुर्दा शुभ है।

सुयोग के सामने सभी कुयोगों का नाश

इक्कस्स भए पंचाणणस्स, भज्जंति गय सय सहस्सा।

तह रवि जोग पणट्ठा, गयणम्मि गहा न दीसंति ।। यति वल्लभ ।।

एक शेर के सामने लाख हाथी भी भाग जाते हैं। एक सूर्य के आने पर आकाश में एक भी ग्रह नहीं दीखता। इसी तरह रवि योग होने पर अन्य अप्योग स्वतः अप्रभावी बन जाते हैं।

रवियोगे राजयोगे, कुमारयोगे असुद्ध दिहए वि।

जं सुह कज्जं कीरइ, तं सव्वं बहुफलं होइ ।। यतिवल्लभ ।।

अशुभ दिन में भी रवियोग, राजयोग व कुमारयोग होने पर जो भी शुभ कार्य किया जावे तो वह बहुत फलदायी होता है।

सिद्धियोगः कुयोगश्च, जायेतां युगपद्यदि।

कुयोगं तत्र निर्जित्य, सिद्धि योगो विजृम्भते ।। आरंभ सिद्धि ।।

सिद्धियोग व कुयोग यदि एक साथ हो तो कुयोग का फल नष्ट हो जाता है।

(घ) यात्रा-निवृत्ति पर प्रवेश मुहूर्त

शुभ नक्षत्र-अनु., चि., मृ., तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, ह., ध.।

शुभ वार-सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

आजकल नक्षत्र चंद्रमा के अनुकूल होने पर रवि को भी प्रवेश करते हैं।

शुभ-तिथि- २,३,५,७,१०,११,१३,१५।

नोट : एक ही दिन में यात्रा और प्रवेश हो तो मात्र प्रवेश देखा जाए।

(च) दीक्षा-ग्रहण-मुहूर्त

शुभ मास-वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

शुभ नक्षत्र-तीनों उत्तरा,अश्वि,रो.,रे.,अनु.,पुष्य.,स्वा.,पुन,श्र.ध., श.,मू.।

शुभ वार-रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ तिथि- २,३,५,७,१०,११,१३ शुक्ल पक्ष में;२,३,५ कृष्ण पक्ष में।

तीर्थंकरों के दीक्षा-कल्याणक दिन, नक्षत्र भी लिए जा सकते हैं।

नोट : गुरु अस्त न हो, अधिक मास व तिथि न हो।

(छ) विद्यारंभ आदि

शुभ तिथि- २,३,५,६,१०,११,१२ कृष्ण पक्ष २,३,५।

शुभ वार-बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र-मृ, आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, मृ, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, ध, श, तीनों पूर्वा।

नोट : सोमवार, मंगलवार, शनिवार को आरंभ किया हुआ कोई भी साहित्य सृजन, शोध-कार्य आदि सफलता का सूचक नहीं होता। जैन विद्या का सत्रारंभ रवि और शुक्र को श्रेष्ठ रहता है।

साहित्य-सृजन में आर्द्रा, पुनः, पुष्य, रे, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, अनु, नक्षत्र उत्तम माने गये हैं, बुध, गुरु, शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

(ज) जन्म के पाये

आर्द्रा नक्षत्र से १० नक्षत्र तक चांदी का, विशाखा नक्षत्र से ४ नक्षत्र तक लोहे का, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र से ६ नक्षत्र तक तांबे का तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र से ७ नक्षत्र तक सोने का पाया होता है।

प्रकारान्तर से जन्म-नक्षत्र के कालमान को समान चार भागों में बांट लिया जाता है। प्रथम भाग में जन्म होने से सोने का पाया, द्वितीय भाग में होने से चांदी का पाया, तृतीय भाग में होने से तांबे का पाया और चौथे भाग में होने से लोहे का पाया मानते हैं।

लग्न और चंद्रमा से भी पाया देखा जाता है। जन्म-कुंडली में लग्न से पहला, छठा, ग्यारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो सोने का पाया, लग्न से दूसरा, पांचवां तथा नौवां चंद्रमा पड़ा हो तो चांदी का पाया, लग्न से तीसरा, सातवां व दसवां चंद्रमा पड़ा हो तो तांबे का पाया मानते हैं। जन्म से चौथा, आठवां व बारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो लोहे का पाया मानते हैं। सोना एवं लोहे का पाया कष्टप्रद तथा चांदी व तांबे का पाया श्रेष्ठ माने जाते हैं।

अधिकांश ज्योतिषियों के मतानुसार लग्न और चंद्रमा से देखा गया पाया ही मान्य होता है। पूरे देश में प्रायः इसी का प्रचलन है।

(झ) वार संज्ञक नक्षत्र

आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा और मघाइये वार संज्ञक नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में जन्म होने पर जातक का जन्म वारों में हुआ माना जाता है। इनमें उत्पन्न बच्चों का प्रायः वही नक्षत्र आने से नामकरण होता है। ज्येष्ठा की अंतिम चार घड़ी तथा मूल की पहली चार घड़ी अभुक्त मूल मानी जाती है जो कष्टदायक है। मूल के प्रथम चरण में जन्म होने से पिता के लिए, दूसरे में माता के लिए, तीसरे में आर्थिक पक्ष के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। मूल का चौथा चरण शुभ माना जाता है। इसके विपरीत आश्लेषा का प्रथम चरण शुभ माना जाता है। दूसरा धन के लिए, तीसरा माता के लिए तथा चौथा पिता के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। इसी प्रकार ज्येष्ठा का प्रथम बड़े भाई के लिए, दूसरा छोटे भाई के लिए, तीसरा माता के लिए और चौथा स्वयं बालक के लिए अनिष्टकारक माना जाता है।

(ट) ग्रहण

सब जगह एक साथ ग्रहण नहीं लगता, इस कारण उसका समय नहीं दिया जाता है। जो ग्रहण जहां नहीं दीखता, उस ग्रहण की अस्वाध्याय आदि रखने की जरूरत नहीं है।

संवत् २०६९ के विशेष पर्व-दिवस

१.	भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, रामनवमी	चैत्र शुक्ला-९	१ अप्रैल २०१२	रविवार
२.	महावीर जयन्ती (महावीर जन्म कल्याणक दिवस)	चैत्र शुक्ला-१३/१४	५ अप्रैल २०१२	गुरुवार
३.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस	वैशाख कृष्णा-११	१६ अप्रैल २०१२	सोमवार
४.	अक्षय तृतीया	वैशाख शुक्ला-३	२४ अप्रैल २०१२	मंगलवार
५.	आचार्यश्री महाश्रमण का जन्म दिवस	वैशाख शुक्ला-९	३० अप्रैल २०१२	सोमवार
६.	आचार्यश्री महाश्रमण का पदाभिषेक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०	१ मई २०१२	मंगलवार
७.	भगवान् महावीर केवलज्ञान कल्याणक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०	१ मई २०१२	मंगलवार
८.	आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा दिवस (युवा दिवस)	वैशाख शुक्ला-१४	५ मई २०१२	शनिवार
९.	आचार्यश्री तुलसी का १६वां महाप्रयाण दिवस	आषाढ़ कृष्णा-३/४	७ जून २०१२	गुरुवार
१०.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९३वां जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)	आषाढ़ कृष्णा-१३	१७ जून २०१२	रविवार
११.	आचार्य भिक्षु जन्म दिवस एवं बोधि दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१३/१४	२ जुलाई २०१२	सोमवार
१२.	चातुर्मासिक पक्खी	आषाढ़ शुक्ला-१५	३ जुलाई २०१२	मंगलवार
१३.	२५३वां तेरापंथ स्थापना दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१५	३ जुलाई २०१२	मंगलवार
१४.	श्रीमज्जयाचार्य निर्वाण दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२	१४ अगस्त २०१२	मंगलवार
१५.	पर्युषण प्रारंभ दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२	१४ अगस्त २०१२	मंगलवार
१६.	स्वतंत्रता दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१३	१५ अगस्त २०१२	बुधवार
१७.	पर्युषण पक्खी	भाद्रपद कृष्णा-१४	१६ अगस्त २०१२	गुरुवार
१८.	संवत्सरी महापर्व	भाद्रपद शुक्ला-४	२१ अगस्त २०१२	मंगलवार
१९.	कालूगणी स्वर्गवास दिवस	भाद्रपद शुक्ला-६	२३ अगस्त २०१२	गुरुवार
२०.	विकास महोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-९	२५ अगस्त २०१२	शनिवार

२१.	२१०वां भिक्षु चरमोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-१३	२९ अगस्त २०१२	बुधवार
२२.	दीपावली	कार्तिक कृष्णा-१४/३०	१३ नवम्बर २०१२	मंगलवार
२३.	भगवान् महावीर निर्वाण कल्याणक दिवस	कार्तिक कृष्णा-१४/३०	१३ नवम्बर २०१२	मंगलवार
२४.	आचार्यश्री तुलसी का ९९वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)	कार्तिक शुक्ला-२	१५ नवम्बर २०१२	गुरुवार
२५.	चातुर्मासिक पक्खी	कार्तिक शुक्ला-१५	२८ नवंबर २०१२	बुधवार
२६.	भगवान् महावीर दीक्षा कल्याणक दिवस	मार्गशीर्ष कृष्णा-९/१०	८ दिसम्बर २०१२	शनिवार
२७.	भगवान् पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस	पौष कृष्णा-१०	७ जनवरी २०१३	सोमवार
२८.	गणतंत्र दिवस	पौष शुक्ला-१४ (द्वि.)	२६ जनवरी २०१३	शनिवार
२९.	१४९वां मर्यादा महोत्सव	माघ शुक्ला-७	१७ फरवरी २०१३	रविवार
३०.	होलिका	फाल्गुन शुक्ला-१४	२६ मार्च २०१३	मंगलवार
३१.	चातुर्मासिक पक्खी	फाल्गुन शुक्ला-१४	२६ मार्च २०१३	मंगलवार
३२.	भगवान् ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस (वर्षीतप प्रारंभ)	चैत्र कृष्णा-८	३ अप्रैल २०१३	बुधवार

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में आयोजित होने वाले वार्षिक महत्त्वपूर्ण आयोजन

कार्यक्रम	स्थान	दिनांक	सम्पर्क सूत्र
महावीर जयन्ती	पाली	5 अप्रैल 2012	9414122581
अक्षय तृतीया	बालोतरा	24 अप्रैल 2012	9312222871
आचार्यश्री महाश्रमण अमृत महोत्सव (चौथा चरण)	बालोतरा	30 अप्रैल 2012	9312222871
वर्ष 2012 का चतुर्मास वि.सं. (2069)	जसोल	3 जुलाई से 28 नवम्बर 2012	9414108229
149वां मर्यादा महोत्सव	टापरा	17-19 फरवरी 2013	9413507407

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२३	शु	१	२२	०२	उ.भा.	१२	३६	६.३६	६.४१	८.३७	३.०१	मीन	पं., अ. १२/३६ से
२४	श	२	२४	१७	रे	१५	१३	६.३५	६.४२	८.३७	३.०२	मेष १३/१३	पं. १५/१३ तक, वै. ०३/२५ से
२५	र	३	०२	४६	अ	१८	०९	६.३३	६.४३	८.३६	३.०३	मेष	राज. १८/०९ से ०२/४६ तक, र. १८/०९ से, वै. ०४/२० तक
२६	सो	४	०५	३०	भ	२१	१७	६.३२	६.४३	८.३५	३.०३	वृष ०४/०६	भ. १६/०८ से ०५/३० तक, र. २१/१७ तक
२७	मं	५	०	०	कृ	२४	२६	६.३१	६.४४	८.३४	३.०३	वृष	र. और कु. २४/२६ से
२८	बु	५	०८	०९	रो	०३	२५	६.३०	६.४४	८.३४	३.०३	वृष	र. और कु. ०३/२५ तक
२९	गु	६	१०	३२	मृ	०६	०१	६.२९	६.४५	८.३३	३.०४	मि. १३/४७	मृ. ०६/०१ तक
३०	शु	७	१२	२८	आ	०	०	६.२८	६.४५	८.३२	३.०४	मिथुन	भ. १२/२८ से ०१/११ तक, सूर्य रेवती में ०५/१६ से
३१	श	८	१३	४२	आ	०७	५९	६.२७	६.४५	८.३१	३.०४	कर्क ०२/५६	
१	र	९	१४	०८	पुन	०९	१२	६.२६	६.४६	८.३१	३.०५	कर्क	र. ०९/१२ से, श्री भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, श्री रामनवमी
२	सो	१०	१३	४१	पु	०९	३५	६.२५	६.४६	८.३०	३.०५	कर्क	र. अहोरात्र, ज्वा. ०९/३५ से १३/४१ तक, भ. ०१/०८ से
३	मं	११	१२	२२	आ	०९	०६	६.२४	६.४६	८.२९	३.०५	सिंह ०६/०६	र. ०९/०६ तक, कु. ०९/०६ से १२/१२ तक, भ. १२/२२ तक
४	बु	१२	१०	१८	म / पू.फा.	०७ / ०५	५२ / ५७	६.२३	६.४७	८.२९	३.०६	सिंह	राज. ०७/५२ से १०/१८ तक, र. ०५/५७ से
५	गु	१३ / १४	०८ / ०४	३५ / २२	उ.फा.	०३	३२	६.२२	६.४७	८.२८	३.०६	क. ११/३३	र. ०३/३२ तक, भ. ०४/२२ से, महावीर जयंती
६	शु	१५	२४	४९	ह	२४	४७	६.२१	६.४७	८.२७	३.०६	कन्या	भ. १४/३७ तक,राज. २४/४७ से २४/४९ तक, व्या. १४/५० से, पक्खी

www.jvbharati.org

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
७	श	१	२१	१०	चि	२१	५५	६.१९	६.४८	९.२६	३.०७	तु. ११/३२	सि. २१/५५ से, व्या. १०/४१ तक
८	र	२	१७	३१	स्वा.	१९	०५	६.१८	६.४८	९.२५	३.०७	तुला	भ. ०३/४६ से
९	सो	३	१४	०६	वि	१६	२८	६.१७	६.४८	९.२५	३.०८	वृ. ११/०६	यम. १६/२८ तक, भ. १४/०६ तक, व्य. २२/३८ से
१०	मं	४	११	०१	अ	१४	१३	६.१६	६.४९	९.२४	३.०८	वृश्चिक	व्य. १९/०५ तक
११	बु	५ / ६	०८ / ०६	३३ / १८	ज्ये	१२	२६	६.१५	६.५०	९.२४	३.०९	धन १२/२६	र. १२/२६ से, कु. और यम. १२/२६ से ०६/१८ तक, भ. ०६/१८ से
१२	गु	७	०४	५०	मू	११	१४	६.१४	६.५०	९.२३	३.०९	धन	र. ११/१४ तक, भ. १७/२९ तक
१३	शु	८	०४	०१	पू.षा.	१०	३८	६.१३	६.५१	९.२३	३.०९	म. १६/३४	सूर्य अश्विनी और मेष में १९/२१ से, मलमास समाप्त
१४	श	९	०३	५०	उ.षा	१०	४०	६.१२	६.५१	९.२२	३.१०	मकर	
१५	र	१०	०४	१३	श्र	११	१८	६.११	६.५२	९.२१	३.१०	कुंभ २३/५०	भ. १५/५७ से ०४/१३ तक, पं. २३/५० से
१६	सो	११	०५	०८	ध	१२	३०	६.१०	६.५२	९.२०	३.१०	कुंभ	पं., आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस
१७	मं	१२	०	०	श	१४	११	६.०९	६.५२	९.२०	३.११	कुंभ	पं., मृ. १४/११ तक
१८	बु	१२	०६	३२	पू.भा.	१६	१८	६.०८	६.५३	९.१९	३.११	मीन ०६/४४	पं.,
१९	गु	१३	०८	१९	उ.भा.	१८	४७	६.०७	६.५४	९.१९	३.११	मीन	पं., भ. ०८/१९ से २१/२१ तक, वै. ०८/०१ से
२०	शु	१४	१०	२७	रे	२१	३३	६.०६	६.५४	९.१८	३.१२	मेष २१/३३	अ. २१/३३ तक, पं. २१/३३ तक, वै. ०८/३९ तक
२१	श	३०	१२	५०	अ	२४	२४	६.०५	६.५५	९.१७	३.१२	मेष	पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२२	र	१	१५	२३	भ	०३	४०	६.०४	६.५६	८.१७	३.१३	मेष	राज. १५/२३ से ०३/४० तक
२३	सो	२	१८	०२	कृ	०	०	६.०३	६.५६	८.१६	३.१३	वृष १०/२७	
२४	मं	३	२०	३७	कृ	०६	४९	६.०२	६.५७	८.१६	३.१४	वृष	र. ०६/४९ से, अक्षय तृतीया
२५	बु	४	२३	००	रो	०९	५०	६.०१	६.५८	८.१५	३.१४	मि. २३/२६	र. ०९/५० तक, भ. ०९/५१ से २३/०० तक
२६	गु	५	०१	०२	मृ	१२	३६	६.००	६.५८	८.१५	३.१४	मिथुन	मृ. १२/३६ तक, र. १२/३६ से
२७	शु	६	०२	३१	आ.	१४	५६	५.५९	६.५९	८.१४	३.१५	मिथुन	सूर्य भरणी में ११/०४ से, र. ११/०४ तक, पुन: १४/५६ से, कु. १४/५६ से ०२/३१ तक
२८	श	७	०३	२०	पुन	१६	४१	५.५८	७.००	८.१४	३.१५	कर्क १०/१८	र. १६/४१ तक, भ. ०३/२० से
२९	र	८	०३	२३	पु	१७	४३	५.५७	७.००	८.१३	३.१६	कर्क	भ. १५/२८ तक
३०	सो	९	०२	३७	आ	१७	५८	५.५७	७.०१	८.१३	३.१६	सिंह १७/५८	र. १७/५८ से, कु. ०२/३७ से, आचार्यश्री महाश्रमण जन्म दिवस अमृत महोत्सव : चतुर्थ चरण
१	मं	१०	०१	०३	म	१७	२५	५.५६	७.०१	८.१२	३.१६	सिंह	र. अहोरात्र, कु. १७/२५ तक, भगवान महावीर केवलज्ञान दिवस, आचार्यश्री महाश्रमण पदाभिषेक दिवस
२	बु	११	२२	४७	पू.फा.	१६	०७	५.५५	७.०२	८.१२	३.१६	क. ३९/४१	भ. १२/०० से २२/४७ तक, र. १६/०७ तक, व्या. ०८/०८ से ०५/०२ तक
३	गु	१२	१९	५५	उ.फा.	१४	११	५.५४	७.०२	८.११	३.१७	कन्या	
४	शु	१३	१६	३४	ह	११	११	५.५३	७.०३	८.१०	३.१७	तुला २२/२३	र. ११/४४ से
५	श	१४	१२	५४	चि / स्वा	०८ / ०५	५७ / ५६	५.५२	७.०३	८.१०	३.१८	तुला	र. ०८/५७ तक, सि. ०८/५७ से ०५/५६ तक, भ. १२/५४ से २३/०१ तक, व्य. १७/२२ से, आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा दिवस (युवा दिवस)
६	र	१५ / १	०९ / ०६	०६ / १९	वि	०३	००	५.५१	७.०४	८.०९	३.१८	वृ. २१/४४	मृ. ०३/०० से, राज. ०५/१९ से, व्य. १३/०६ तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
७	सो	२	०१	४५	अ	२४	१३	५.५१	७.०४	६.०६	३.१८	वृश्चिक	
८	मं	३	२२	३०	ज्ये	२१	४५	५.५०	७.०५	६.०६	३.१९	धन २१/४५	भ. १२/०४ से २२/३० तक
९	बु	४	१९	४४	मू	१९	४६	५.५०	७.०६	६.०६	३.१९	धन	यम. १९/४६ तक, कु. १९/४४ से १९/४६ तक
१०	गु	५	१७	३४	पू.षा.	१८	२३	५.४९	७.०७	६.०६	३.१९	म. २६/१०	र. १८/२३ से ०५/१८ तक, सूर्य कृतिका में ०६/१८ से
११	शु	६	१६	०६	उ.षा.	१७	४२	५.४९	७.०८	६.०६	३.२०	मकर	भ. १६/०६ से ०३/३९ तक, र. १७/४२ से
१२	श	७	१५	२३	श्र	१७	४५	५.४८	७.०८	६.०६	३.२०	कुंभ ०६/०३	र. १७/४५ तक, पं. ०६/०३ से
१३	र	८	१५	२५	ध	१८	३२	५.४७	७.०९	६.०८	३.२०	कुंभ	पं.
१४	सो	९	१६	०९	श	२०	०१	५.४७	७.१०	६.०७	३.२१	कुंभ	पं., सूर्य वृषभ में १६/११ से, कु.२०/०१से, भ.०४/४५से, वै.१३/४८ से
१५	मं	१०	१७	३०	पू.भा.	२२	०५	५.४६	७.१०	६.०७	३.२१	मीन १५/३१	पं., कु. २२/०५ तक, भ. १७/३० तक, सि.२२/०५ से, वै.१३/४९ तक
१६	बु	११	१९	२३	उ.भा.	२४	३७	५.४६	७.१०	६.०७	३.२१	मीन	पं., राज १९/२३ से २४/३७ तक
१७	गु	१२	२१	३८	रे	०३	२६	५.४५	७.१०	६.०६	३.२१	मेष ०३/२६	पं. ०३/२६ तक
१८	शु	१३	२४	०८	अ	०	०	५.४४	७.११	६.०६	३.२२	मेष	भ. २४/०८ से
१९	श	१४	०२	४३	अ	०६	३३	५.४४	७.१२	६.०६	३.२२	मेष	भ. १३/२५ तक
२०	र	३०	०५	१८	भ	०९	४२	५.४३	७.१२	६.०५	३.२२	वृष. १३/२६	सूर्य ग्रहण पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२१	सो	१	०	०	कृ	१२	४८	५.४३	७.१३	६.०५	३.२२	वृष	कु. १२/४८ से
२२	मं	१	०७	४५	रो	१५	४४	५.४३	७.१३	६.०५	३.२२	मि. ०३/०८	कु. ०७/४५ तक, राज. १५/४४ से
२३	बु	२	०९	५७	मृ	१८	२६	५.४२	७.१४	६.०५	३.२३	मिथुन	राज. १८/२६ तक, र. १८/२६ से
२४	गु	३	११	५०	आ	२०	४६	५.४२	७.१५	६.०५	३.२३	मिथुन	र. २०/४६ तक, सि. २०/४६ से, म. २४/३६ से, सूर्य रोहिणी में ०१/२७ से, र. ०१/२७ से
२५	शु	४	१३	१६	पुन	२२	३९	५.४१	७.१५	६.०५	३.२३	कर्क १३/१४	म. १३/१६ तक, कु. १३/१६ से २२/३९ तक, र. २२/३९ तक
२६	श	५	१४	११	पु	२३	५९	५.४१	७.१५	६.०५	३.२३	कर्क	र. २३/५९ से
२७	र	६	१४	३०	आ	२४	४४	५.४१	७.१६	६.०५	३.२४	सिंह २४/४४	र. २४/४४ तक, यम. २४/४४ से, व्या. १९/५३ से
२८	सो	७	१४	११	म	२४	५०	५.४१	७.१६	६.०५	३.२४	सिंह	म. १४/११ से ०१/४६ तक, व्या. १८/२६ तक
२९	मं	८	१३	११	पू.फा.	२४	१७	५.४०	७.१७	६.०४	३.२४	सिंह	र. २४/१७ से
३०	बु	९	११	३३	उ.फा.	२३	०६	५.४०	७.१७	६.०४	३.२४	क. ०६/०४	र. अहोरात्र, कु. २३/०६ से
३१	गु	१०	०९	१८	ह	२१	२२	५.४०	७.१८	६.०४	३.२४	कन्या	म. १९/५९ से, र. २१/२२ तक, व्य. ११/११ से
१	शु	११/१२	०६/०२	३३/३१	चि.	१९	१०	५.४०	७.१८	६.०४	३.२४	तुला ०८/१९	म. ०६/३३ तक, राज. ०६/३३ से १९/१० तक, व्य. ०७/४९ तक
२	श	१३	२३	५५	स्वा.	१६	३७	५.४०	७.१८	६.०४	३.२४	तुला	सि. १६/३७ तक, र. १६/३७ से
३	र	१४	२०	१९	वि	१३	५२	५.३९	७.१८	६.०४	३.२५	वृ. ०८/१४	र. १३/५२ तक, मृ. १३/५२ से, म. २०/१९ से, राज. २०/१९ से
४	सो	१५	१६	४३	अ	११	०५	५.३९	७.१९	६.०४	३.२५	वृश्चिक	म. ०६/३० तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
५	मं	१	१३	१७	ज्ये/मू	०८/०६	२५/०१	५.३९	७.१९	९.०४	३.२५	धन ०८/२५	कु. और ज्वा. ०८/२५ से १३/१७ तक, राज. ०६/०१ से
६	बु	२	१०	१०	पू.षा.	०४	०५	५.३९	७.२०	९.०४	३.२५	धन	भ. २०/४६ से, राज. ०४/०५ तक
७	गु	३/४	०७/०६	३०/२६	उ.षा.	०२	४४	५.३९	७.२१	९.०४	३.२५	म. ०६/४२	भ. ०७/३० तक, सूर्य मृगशीर्ष में २३/२२ से, आचार्यश्री तुलसी का १६वां महाप्रयाण दिवस
८	शु	५	०४	०६	श्र	०२	०५	५.३९	७.२१	९.०४	३.२५	मकर	कु. ०२/०५ तक, वै. २४/२० से
९	श	६	०३	३३	ध	०२	११	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	कुंभ १४/०२	पं. १४/०२ से, र. ०२/११ से, भ. ०३/३३ से, वै. २२/४४ तक
१०	र	७	०३	४८	श	०३	०५	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	कुंभ	पं., भ. १५/३५ तक, र. ०३/०५ तक
११	सो	८	०४	४९	पू.भा.	०४	४४	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	मीन २२/१६	पं.,
१२	मं	९	०	०	उ.भा.	०	०	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	मीन	पं., सि. अहोरात्र
१३	बु	९	०६	२९	उ.भा.	०७	०२	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	मीन	पं., भ. १९/३२ से
१४	गु	१०	०८	४०	रे	०९	४८	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	मेष ०९/४८	भ. ०८/४० तक, पं. ०९/४८ तक, सूर्य मिथुन में २२/४६ से
१५	शु	११	११	०९	अ	१२	५२	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	मेष	कु. ११/०९ तक, राज. १२/५२ से
१६	श	१२	१३	४५	भ.	१५	०१	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	वृष ३२/४८	
१७	र	१३	१६	१६	कृ	१९	०५	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	वृष	भ. १६/१६ से ०५/२८ तक, आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९३वां जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)
१८	सो	१४	१८	३५	रो	२१	५६	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	वृष	अ. २१/५६ से
१९	मं	३०	२०	३३	मृ	२४	२७	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	मि. ११/१६	यम. २४/२७ से पक्खी

www.jvbharati.org

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२०	बु	१	२२	०७	आ	०२	३५	५.३६	७.२६	६.०६	३.२७	मिथुन	
२१	गु	२	२३	१५	पुन	०४	१७	५.३६	७.२६	६.०६	३.२७	कर्क २१/२४	मि. ०४/१७ तक, सूर्य आर्द्रा में २२/१६ से, गुरुपुष्यामृतयोग ०४/१७ से (विवाहे वर्ज्य), व्या.०३/५३ से, गाजबीज की अस्वाध्याय नहीं
२२	शु	३	२३	५४	पु.	०५	३१	५.३६	७.२६	६.०६	३.२७	कर्क	राज. २३/५४ तक, र. ०५/३१ से, मृ. ०५/३१ से, व्या.०३/२१ तक
२३	श	४	२४	०६	आ	०	०	५.४०	७.२७	६.०७	३.२७	कर्क	र. अहोरात्र, भ. १२/०४ से २४/०६ तक
२४	र	५	२३	४८	आ	०६	१८	५.४१	७.२७	६.०८	३.२७	सिंह ०६/१८	र. ०६/१८ तक, यम. ०६/१८ से
२५	सो	६	२३	०२	म	०६	३६	५.४१	७.२७	६.०८	३.२७	सिंह	कु. ०६/३६ तक, र. ०६/३६ से, व्य. २३/३४ से
२६	मं	७	२१	४८	पू.फा. / उ.फा.	०६ / ०५	२८ / २१	५.४२	७.२७	६.०८	३.२६	क. १२/१८	राज. ०६/२५ तक, र. ०६/२५ तक, भ.२१/४८ से, व्य.२१/३२ तक
२७	बु	८	२०	०७	ह	०४	४३	५.४२	७.२७	६.०८	३.२६	कन्या	भ. ०९/०१ तक, र. ०४/४३ से
२८	गु	९	१८	००	चि.	०३	१४	५.४३	७.२७	६.०९	३.२६	तुला १६/०१	र. अहोरात्र
२९	शु	१०	१५	३०	स्वा	०१	२३	५.४३	७.२७	६.०९	३.२६	तुला	र. ०१/२३ तक, कु. ०१/२३ से, भ. ०२/०८ से
३०	श	११	१२	४१	वि	२३	१७	५.४४	७.२७	६.१०	३.२६	वृ. १७/६०	भ. १२/४१ तक
१	र	१२	०९	४०	अ	२१	००	५.४४	७.२७	६.१०	३.२६	वृश्चिक	राज. ०९/४० तक, र. २१/०० से, मृ. २१/०० तक
२	सो	१३ / १४	०६ / ०३	३१ / २३	ज्ये	१८	४०	५.४५	७.२७	६.११	३.२५	धन १८/४०	र. १८/४० तक, भ. ०३/२३ से, आचार्य भिक्षु जन्म दिवस एवं बोधि दिवस
३	मं	१५	२४	२४	मू	१६	२५	५.४५	७.२७	६.११	३.२५	धन	भ. १३/५२ तक, राज. १६/२५ से २४/२४ तक, २५३वां तेरापंथ स्थापना दिवस, चातुर्मासिक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
४	बु	१	२१	४२	पू.षा.	१४	२४	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	म. १६/४५	वै. १६/२२ से
५	गु	२	१९	२५	उ.षा.	१२	४७	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मकर	सूर्य पुनर्वसु में २१/५५ से, वै. १३/२२ तक
६	शु	३	१७	४४	श्र	११	४२	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	कुंभ २३/२४	भ.०६/३० से १७/४४ तक, राज.११/४२ से १७/४४ तक, पं.२३/२४ से
७	श	४	१६	४४	ध	११	१७	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	कुंभ	पं.
८	र	५	१६	३१	श	११	३७	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	कुंभ	पं.
९	सो	६	१७	०५	पू.भा.	१२	४३	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मीन ०६/२२	पं., कु. १२/४३ तक, र. १२/४३ से, भ. १७/०५ से ०५/४० तक
१०	मं	७	१८	२५	उ.भा.	१४	३४	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मीन	पं., राज., सि. और र. १४/३४ तक
११	बु	८	२०	२२	रे	१७	०२	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मेष १७/०२	पं. १७/०२ तक, मू. १७/०२ से
१२	गु	९	२२	४४	अ	१९	५७	५.४७	७.२६	९.१२	३.२५	मेष	
१३	शु	१०	०१	१७	भ	२३	०३	५.४७	७.२६	९.१२	३.२४	वृष ०३/१०	भ. १२/०० से ०१/१७ तक
१४	श	११	०३	४७	कृ	०२	०८	५.४७	७.२५	९.१२	३.२४	वृष	अ. ०२/०८ से (प्रयाणे वर्ज्य)
१५	र	१२	०६	०२	रो	०४	५९	५.४८	७.२५	९.१२	३.२४	वृष	राज. ०४/५९ से ०६/०२ तक
१६	सो	१३	०	०	मृ	०	०	५.४९	७.२५	९.१३	३.२४	मि. १९/१५	अ. अहोरात्र, सूर्य कर्क में ०९/३७ से
१७	मं	१३	०७	५०	मृ	०७	२५	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	मिथुन	यम. ०७/२५ से, भ. ०७/५० से २०/३३ तक, व्या. ११/५५ से
१८	बु	१४	०९	०८	आ	०९	२१	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	कर्क ०४/३८	व्या. ११/५५ तक [illegible]
१९	गु	३०	०९	५४	पुन	१०	४६	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	कर्क	मि. १०/४६ तक, गुरुपुष्यामृतयोग १०/४६ से (विवाहे वर्ज्य), सूर्य पुष्य में २१/२६ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२०	शु	१	१०	०९	पु	११	४१	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	कर्क	राज. १०/०९ से ११/४१ तक, मृ. ११/४१ से
२१	श	२	०९	५४	आ	१२	०७	५.५२	७.२४	९.१५	३.२३	सिंह १२/०७	व्या. ०९/३१ से
२२	र	३	०९	१५	म	१२	०९	५.५२	७.२३	९.१५	३.२३	सिंह	यम. १२/०९ तक, र. १२/०९ से, म. २०/४६ से, व्य. ०७/५९ तक
२३	सो	४	०८	१३	पू.फा.	११	४९	५.५३	७.२३	९.१५	३.२३	क. १७/४३	म. ०८/१३ तक, र. ११/४९ तक
२४	मं	५/६	०६/०५	५३/१७	उ.फा.	११	१२	५.५३	७.२२	९.१५	३.२२	कन्या	र. ११/१२ से, कु. ११/१२ से ०५/१७ तक
२५	बु	७	०३	२७	ह	१०	१९	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	तुला २१/४७	र. १०/१९ तक, राज. १०/१९ से ०३/२७ तक, म. ०३/२७ से
२६	गु	८	०१	२४	चि	०९	१२	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	तुला	म. १४/२७ तक
२७	शु	९	२३	१०	स्वा	०७	५३	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	वृ. २४/४७	र. ०७/५३ से, कु. २३/१० से
२८	श	१०	२०	४७	वि/अ	०६/०४	२४/४६	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	वृश्चिक	र. ०४/४६ तक
२९	र	११	१८	१८	ज्ये	०३	०३	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	धन ०३/०३	म. ०७/३३ से १८/१८ तक, सि. ०३/०३ से
३०	सो	१२	१५	४६	मू	०१	२०	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	धन	र. ०१/२० से, वै. ०८/३८ से ०५/३१ तक
३१	मं	१३	१३	१८	पू.षा.	२३	४४	५.५७	७.१८	९.१७	३.२०	म. ०६/५८	र. २३/४४ तक
१	बु	१४	११	००	उ.षा.	२२	२०	५.५७	७.१८	९.१७	३.२०	मकर	म. ११/०० से २१/५७ तक
२	गु	१५	०८	५९	श्र	२१	१८	५.५८	७.१७	९.१८	३.२०	मकर	सूर्य आश्लेषा में २०/१९ से, रक्षा बंधन, पक्खी

www.jvbharati.org

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३	शु	१	०७	२३	ध	२०	४५	५.५९	७.१७	९.१८	३.१९	कुंभ ०८/५८	राज. ०७/२३ से २०/४५ तक, पं. ०८/५८ से
४	श	२ ३	०६ ०५	२० ५५	श	२०	४८	५.५९	७.१६	९.१८	३.१९	कुंभ	पं., म. १८/०२ से ०५/५५ तक
५	र	४	०६	१४	पू.भा.	२१	३३	६.००	७.१५	९.१९	३.१९	मीन १५/१७	पं.
६	सो	५	०	०	उ.भा.	२३	००	६.०१	७.१४	९.१९	३.१८	मीन	पं.
७	मं	५	०७	१७	रे	०१	०८	६.०१	७.१४	९.१९	३.१८	मेष ०१/०८	पं. ०१/०८ तक, र. और कु. ०१/०८ से, अ. ०१/०८ से (प्रवेशे वर्ज्य)
८	बु	६	०९	००	अ	०३	४७	६.०२	७.१३	९.२०	३.१८	मेष	मृ. ०३/४७ तक, भ. ०९/०० से २२/०३ तक, कु. ०९/०० तक, राज. ०३/४७ से, र. ०३/४७ तक
९	गु	७	११	१३	भ	०	०	६.०२	७.१२	९.२०	३.१७	मेष	
१०	शु	८	१३	४३	भ	०६	४८	६.०३	७.११	९.२०	३.१७	वृष १३/४३	ज्वा. ०६/४८ से १३/४३ तक
११	श	९	१६	१४	कृ	०९	५४	६.०३	७.१०	९.२०	३.१७	वृष	ज्वा. ०९/५४ से १६/१४ तक, अ. ०९/५४ से (प्रयाणे वर्ज्य), भ. ०५/२६ से, व्या. १९/३२ से
१२	र	१०	१८	३२	रो	१२	४९	६.०४	७.०९	९.२०	३.१६	मि. ०२/०६	भ. १८/३२ तक, व्या. २०/२० तक
१३	सो	११	२०	२१	मृ	१५	२१	६.०४	७.०९	९.२०	३.१६	मिथुन	अ. १५/२१ तक
१४	मं	१२	२१	३५	आ	१७	२०	६.०५	७.०७	९.२०	३.१६	मिथुन	श्रम. १७/२० तक, श्रीमज्जयाचार्य निर्वाण दिवस, पर्युषण प्रारंभ
१५	बु	१३	२२	१०	पुन	१८	४०	६.०५	७.०६	९.२०	३.१५	कर्क २२/१०	भ. २२/१० से, व्य. २०/१९ से, स्वतंत्रता दिवस
१६	गु	१४	२२	०५	पु	१९	२१	६.०६	७.०५	९.२१	३.१५	कर्क	गुरुपुष्यामृतयोग १९/२१ तक (विवाहे वर्ज्य), भ. १०/१२ तक, सूर्य मघा और सिंह में १८/०० से, व्य. १९/१६ तक पक्खी
१७	शु	३०	२१	२५	आ	१९	२७	६.०६	७.०४	९.२१	३.१४	सिंह १९/२७	मृ. १९/२७ तक, कु. २१/२५ से

www.jvbharati.org

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१८	श	१	२०	१५	म	१९	०३	६.०७	७.०३	९.२१	३.१४	सिंह	
१९	र	२	१८	४१	पू.फा.	१८	१६	६.०७	७.०२	९.२१	३.१४	क. २४/०१	राज. १८/१६ तक
२०	सो	३	१६	५१	उ.फा.	१७	१२	६.०७	७.०१	९.२१	३.१३	कन्या	र. १७/१२ से, म. ०३/५२ से
२१	मं	४	१४	५१	ह	१५	५७	६.०८	७.००	९.२१	३.१३	तुला २३/१७	म. १४/५१ तक, कु. १४/५१ से १५/५७ तक, र. १५/५७ तक, संवत्सरी महापर्व
२२	बु	५	१२	४४	चि.	१४	३७	६.०८	७.००	९.२१	३.१३	तुला	र. १४/३७ से
२३	गु	६	१०	३६	स्वा.	१३	१५	६.०९	६.५९	९.२१	३.१३	वृ. ०५/१३	र. १३/१५ तक, कालूगणी स्वर्गवास दिवस
२४	शु	७/८	०८/०५	२८/२२	वि	११	५३	६.०९	६.५८	९.२१	३.१२	वृश्चिक	म. ०८/२८ से १९/२५ तक, वै. २१/१५ से
२५	श	९	०४	१९	अ	१०	३४	६.१०	६.५७	९.२२	३.११	वृश्चिक	र. १०/३४ से, वै. १८/२९ तक, विकास महोत्सव
२६	र	१०	०२	२१	ज्ये	०९	१८	६.११	६.५६	९.२२	३.११	धन ०९/१८	र. अहोरात्र, सि. ०९/१८ से
२७	सो	११	२४	३०	मू	०८	०७	६.११	६.५५	९.२२	३.११	धन	कु. ०८/०७ तक, र. ०८/०७ तक, म. १३/२५ से २४/३० तक
२८	मं	१२	२२	४९	पू.षा./उ.षा.	०७/०६	०४/११	६.१२	६.५४	९.२३	३.१०	म. १३/१०	राज. ०७/०४ तक, र. ०६/११ से
२९	बु	१३	२१	२१	श्र	०५	३४	६.१३	६.५३	९.२३	३.१०	मकर	र. ०५/३४ तक, २१०वां भिक्षु चरमोत्सव दिवस
३०	गु	१४	२०	१३	ध	०५	१८	६.१३	६.५२	९.२३	३.१०	कुंभ १७/२३	सूर्य पूर्वाफाल्गुनी में १३/४७ से, र. १३/४७ से ०५/१८ तक, पं. १७/२३ से, भद्रा. २०/१३ से
३१	शु	१५	१९	३०	श	०५	२९	६.१४	६.५१	९.२३	३.०९	कुंभ	पं., म. ०७/४८ तक, कु. ०५/२९ से, पक्खी

www.jvbharati.org

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१	श	१	१९	१७	पू.भा.	०६	१२	६.१४	६.५०	९.२३	३.०९	मीन ३३/५१	पं.
२	र	२	१९	४०	उ.भा.	०	०	६.१४	६.४९	९.२३	३.०९	मीन	पं., राज. अहोरात्र
३	सो	३	२०	४१	उ.भा.	०७	३१	६.१५	६.४८	९.२३	३.०८	मीन	पं., राज. ०७/३१ तक, भ. ०८/०६ से २०/४१ तक
४	मं	४	२२	१८	रे	०९	२७	६.१५	६.४७	९.२३	३.०८	मेष ०९/२७	पं. ०९/२७ तक, ज्ञा. ०९/२७ से (प्रवेशे वर्ज्य), कु. २२/१८ से
५	बु	५	२४	२६	अ	११	५५	६.१५	६.४५	९.२३	३.०७	मेष	कु. ११/५५ तक, कु. ११/५५ तक, ज्वा. ११/५५ से २४/२६ तक, व्या. ०२/०४ से
६	गु	६	०२	५५	भ	१४	४८	६.१६	६.४४	९.२३	३.०७	वृष २१/३४	र. १४/४८ से, यम. १४/४८ से, भ. ०२/५५ से, व्या. ०३/०२ तक
७	शु	७	०५	३१	कृ	१७	५४	६.१६	६.४३	९.२३	३.०७	वृष	भ. १६/१३ तक, र. १७/५४ तक, यम. १७/५४ से
८	श	८	०	०	रो	२०	५८	६.१७	६.४२	९.२३	३.०६	वृष	अ. २०/५८ तक (प्रयाणे वर्ज्य)
९	र	८	०७	५७	मृ	२३	४४	६.१७	६.४१	९.२३	३.०६	मि. १०/३४	व्या. ०५/४४ से
१०	सो	९	०९	५८	आ	०१	५९	६.१८	६.४०	९.२३	३.०५	मिथुन	भ. २२/४६ से, कु. ०१/५९ से, व्या. ०५/५५ तक
११	मं	१०	११	२३	पुन	०३	३४	६.१८	६.३९	९.२३	३.०५	कर्क २१/१४	भ. ११/२३ तक, कु. ०३/३४ तक
१२	बु	११	१२	०४	पु	०४	२३	६.१८	६.३८	९.२३	३.०५	कर्क	राज. १२/०४ से ०४/३३ तक
१३	गु	१२	११	५९	आ	०४	२९	६.१८	६.३७	९.२३	३.०५	सिंह ०४/२६	सूर्य उत्तराफाल्गुनी में ०७/५१ से
१४	शु	१३	११	०९	म	०३	५३	६.२०	६.३६	९.२४	३.०४	सिंह	भ. ११/०९ से २२/२९ तक, सि. ०३/५३ से
१५	श	१४	०९	४१	पू.फा.	०२	४५	६.२०	६.३५	९.२४	३.०४	सिंह	पक्खी
१६	र	३० / १	०[illegible] / ०५	४१ / १६	उ.फा.	०१	१२	६.२१	६.३४	९.२४	३.०३	क. ०८/२३	सूर्य कन्या में १७/५५ से, अ. ०१/१२ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१७	सो	२	०२	४२	ह	२३	२३	६.२१	६.३३	८.२४	३.०३	कन्या	
१८	मं	३	२३	५९	चि.	२१	२७	६.२१	६.३२	८.२४	३.०३	तुला १०/२५	राज. २१/२७ तक, र. २१/२७ से
१९	बु	४	२१	१७	स्वा.	१९	३१	६.२१	६.३१	८.२४	३.०२	तुला	म. १०/३८ से २१/१७ तक, र. १९/३१ तक, कु. २१/१७ से, मैं. ०९/४३ से ०६/२५ तक
२०	गु	५	१८	४२	वि	१७	४२	६.२२	६.२९	८.२४	३.०२	वृ. १२/०८	र. १७/४२ से
२१	शु	६	१६	१९	अ	१६	०४	६.२२	६.२८	८.२४	३.०२	वृश्चिक	र. १६/०४ तक
२२	श	७	१४	११	ज्ये	१४	४०	६.२३	६.२७	८.२४	३.०१	धन १४/४०	भ. १४/११ से ०१/१३ तक
२३	र	८	१२	१९	मू	१३	३३	६.२३	६.२५	८.२४	३.००	धन	सि. १३/३३ तक, र. १३/३३ से
२४	सो	९	१०	४४	पू.षा.	१२	४४	६.२४	६.२३	८.२४	२.५९	म. १८/३४	र. अहोरात्र, मृ. १२/४४ से
२५	मं	१०	०९	२९	उ.षा.	१२	१३	६.२५	६.२२	८.२४	२.५९	मकर	र. १२/१३ तक, कु. १२/१३ से, भ. २०/५८ से
२६	बु	११	०८	३३	श्र	१२	०२	६.२५	६.२१	८.२४	२.५९	कुंभ २४/०५	भ. और कु. ०८/३३ तक, राज. १२/०२ से, सूर्य हस्त में २३/१७ से, पं. २४/०५ से
२७	गु	१२	०७	५९	ध	१२	१३	६.२६	६.२०	८.२४	२.५८	कुंभ	पं.
२८	शु	१३	०७	४९	श	१२	४७	६.२६	६.१९	८.२४	२.५८	कुंभ	पं., र. १२/४७ से
२९	श	१४	०८	०६	पू.भा.	१३	४७	६.२६	६.१८	८.२४	२.५८	मीन ०७/२६	पं., भ. ०८/०६ से २०/२४ तक, र. १३/४७ तक
३०	र	१५	०८	५०	उ.भा.	१५	१५	६.२७	६.१७	८.२४	२.५८	मीन	पं., राज. ०८/५० तक पक्खी

www.jvbharati.org

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१	सो	१	१०	०६	रे	१७	१२	६.२७	६.१६	८.२४	२.५७	मेष १७/१२	पं. १७/१२ तक, व्या. ०८/४६ से
२	मं	२	११	५०	अ	१९	३७	६.२८	६.१५	८.२५	२.५७	मेष	अ. १९/३७ तक (प्रवेश वर्ज्य), राज. १९/३७ से, भ. २४/५३ से, व्या. ०९/०३ तक
३	बु	३	१४	०१	भ	२२	२६	६.२९	६.१३	८.२५	२.५६	वृष २२/११	भ. और राज. १४/०१ तक, सि. २२/२६ से
४	गु	४	१६	३२	कृ	०१	३१	६.२९	६.१२	८.२५	२.५६	वृष	यम. ०१/३१ तक
५	शु	५	१९	१२	रो	०४	४१	६.२९	६.११	८.२५	२.५५	वृष	कु. और यम. ०४/४१ तक, र. ०४/४१ से, व्य. ११/३९ से
६	श	६	२१	४८	मृ	०	०	६.३०	६.१०	८.२५	२.५५	मि. १८/१३	र. अहोरात्र, भ. २१/४८ से, व्य. १२/४१ तक
७	र	७	२४	०६	मृ	०७	४१	६.३०	६.०९	८.२५	२.५५	मिथुन	राज. ०७/४१ तक, र. ०७/४१ तक, भ. ११/०० तक
८	सो	८	०१	५२	आ	१०	१९	६.३०	६.०८	८.२५	२.५४	कर्क ०५/५६	
९	मं	९	०२	५५	पुन	१२	२२	६.३१	६.०७	८.२५	२.५४	कर्क	
१०	बु	१०	०३	१०	पु	१३	४१	६.३१	६.०६	८.२५	२.५४	कर्क	सूर्य चित्रा में १२/२१ से, ज्वा. १३/४१ से ०१/१० तक, भ. १५/०९ से ०३/१० तक
११	गु	११	०२	३५	आ	१४	१२	६.३२	६.०५	८.२५	२.५३	सिंह १४/२२	
१२	शु	१२	०१	१२	म	१३	५४	६.३२	६.०४	८.२५	२.५३	सिंह	राज. १३/५४ से ०१/१२ तक, सि. १३/५४ से
१३	श	१३	२३	०९	पू.फा.	१२	५३	६.३३	६.०३	८.२५	२.५२	क. १८/३२	भ. २३/०९ से
१४	र	१४	२०	३३	उ.फा.	११	१५	६.३३	६.०२	८.२५	२.५२	कन्या	भ. ०९/५५ तक, अ. ११/१५ से, वै. ०१/४८ से
१५	सो	३०	१७	३४	ह	०९	०९	६.३४	६.०१	८.२६	२.५२	तुला १८/५१	वै. २२/०७ तक पक्खी

www.jvbharati.org

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१६	मं	१	१४	१९	चि / स्वा	०६ / ०४	४६ / १३	६.३५	५.५९	९.२६	२.५१	तुला	सूर्य तुला में ०५/५१ से
१७	बु	२	११	००	वि	०१	४२	६.३५	५.५८	९.२६	२.५०	वृ. २०/१९	र. ०१/४२ से, राज. और अ. ०१/४२ से
१८	गु	३ / ४	०७ / ०४	४१ / ४२	अ	२३	२१	६.३६	५.५७	९.२६	२.५०	वृश्चिक	भ. १८/११ से ०४/४२ तक, र. २३/२१ तक
१९	शु	५	०१	५८	ज्ये	२१	१७	६.३७	५.५६	९.२७	२.४९	धन २१/१७	र. २१/१७ से, कु. २१/१७ से
२०	श	६	२३	३९	मू	१९	३६	६.३७	५.५५	९.२७	२.४९	धन	र. १९/३६ तक
२१	र	७	२१	४८	पू.षा.	१८	२३	६.३८	५.५४	९.२७	२.४९	म. २४/१०	राज. १८/२३ तक, भ. २१/४८ से
२२	सो	८	२०	२८	उ.षा	१७	४०	६.३८	५.५३	९.२७	२.४९	मकर	भ. ०९/०४ तक, यु. १७/४० तक, र. १७/४० से, सि. १७/४० से
२३	मं	९	१९	४०	श्र	१७	२९	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	कुंभ ०५/३५	र. अहोरात्र, सूर्य स्वाति में २२/४६ से, पं. ०५/३५ से, गाजबीज की अस्वाध्याय प्रारंभ
२४	बु	१०	१९	२५	ध	१७	४९	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	कुंभ	पं., र. अहोरात्र
२५	गु	११	१९	४०	श	१८	४०	६.४०	५.५१	९.२८	२.४८	कुंभ	पं., भ. ०७/२९ से १९/४० तक, र. १८/४० तक
२६	शु	१२	२०	२६	पू.भा.	२०	००	६.४१	५.५१	९.२८	२.४७	मीन १३/३८	पं., राज. २०/०० से २०/२६ तक, व्या. १४/५५ से
२७	श	१३	२१	४०	उ.भा.	२१	४६	६.४१	५.४९	९.२८	२.४७	मीन	पं., र. २१/४६ से, व्या. १४/४० तक
२८	र	१४	२३	१९	रे	२३	५७	६.४२	५.४८	९.२८	२.४६	मेष २३/५७	भ. २३/१९ से, पं. २३/५७ तक, र. २३/५७ तक
२९	सो	१५	०१	२१	अ	०२	३०	६.४३	५.४८	९.२९	२.४६	मेष	भ. १२/१७ तक, कु. ०१/२१ से ०२/३० तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३०	मं	१	०३	४२	भ	०५	२१	६.४४	५.४७	९.३०	२.४६	मेष	राज. ०३/४२ से ०५/२१ तक, व्य. १५/५१ से
३१	बु	२	०६	१८	कृ	०	०	६.४५	५.४६	९.३०	२.४५	वृष १२/०६	सि. अहोरात्र, व्य. १६/४२ तक
१	गु	३	०	०	कृ	०८	२४	६.४५	५.४६	९.३०	२.४५	वृष	यम. ०८/२४ तक, भ. १९/३९ से
२	शु	३	०९	००	रो	११	३४	६.४५	५.४५	९.३०	२.४५	मि. ०१/०८	यम. ११/३४ तक, भ. ०९/०० तक
३	श	४	११	४०	मृ	१४	४०	६.४६	५.४४	९.३०	२.४४	मिथुन	
४	र	५	१४	०७	आ	१७	३३	६.४६	५.४३	९.३०	२.४४	मिथुन	र. १७/३३ से
५	सो	६	१६	१०	पुन	२०	००	६.४७	५.४३	९.३१	२.४४	कर्क ११/२६	कु. १६/१० तक, भ. १६/१० से ०४/५९ तक, र. २०/०० तक
६	मं	७	१७	३८	पु	२१	५३	६.४८	५.४२	९.३२	२.४३	कर्क	राज. १७/३८ तक, सूर्य विशाखा में ०६/५९ से, र. ०६/५९ से २१/५३ तक
७	बु	८	१८	२३	आ	२३	०४	६.४९	५.४१	९.३२	२.४३	सिंह २३/०४	
८	गु	९	१८	२०	म	२३	२८	६.५०	५.४०	९.३३	२.४२	सिंह	भ. ०६/०१ से
९	शु	१०	१७	२९	पू.फा.	२३	०४	६.५१	५.४०	९.३३	२.४२	क. ०४/५२	सि. २३/०४ तक, भ. १७/२९ तक, वै. १७/०६ से
१०	श	११	१५	४९	उ.फा.	२१	५६	६.५१	५.३९	९.३३	२.४२	कन्या	मृ. और यम. २१/५६ से, वै. १४/३५ तक
११	र	१२	१३	२८	ह	२०	०८	६.५२	५.३९	९.३४	२.४२	कन्या	अ. २०/०८ तक, धन तेरस
१२	सो	१३	१०	३४	चि	१७	५०	६.५३	५.३९	९.३४	२.४१	तुला ०७/०३	भ. १०/३४ से २०/५७ तक
१३	मं	१४ / ३०	०७ / ०३	१६ / ३९	स्वा	१५	०८	६.५३	५.३८	९.३४	२.४१	तुला	कु. ०३/३९ से, दीपावली, महावीर निर्वाण दिवस पक्खी

www.jvbharati.org

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१४	बु	१	२३	५८	वि	१२	१४	६.५४	५.३७	९.३५	२.४१	वृ. ०६/६८	श्री वीर निर्वाण सं. २५३९, कु. १२/१४ तक, अ. १२/१४ से, याज. २३/५८ से
१५	गु	२	२०	२१	अ / ज्ये	०६ / ०६	१९ / ३२	६.५५	५.३७	९.३६	२.४०	धन ०६/३२	सूर्य वृश्चिक में ०५/३८ से, र. ०६/३२ से, आचार्यश्री तुलसी का ९९वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)
१६	शु	३	१६	५७	मू	०४	०४	६.५६	५.३६	९.३६	२.४०	धन	म.०३/३३से,र.०४/०४तक
१७	श	४	१३	५७	पू.षा.	०२	०३	६.५६	५.३५	९.३६	२.४०	धन	म. १३/५७ तक, र. ०२/०३ से
१८	र	५	११	२७	उ.षा.	२४	३७	६.५७	५.३४	९.३६	२.३९	म ०४/३८	र. २४/३७ तक
१९	सो	६	०९	३४	श्र	२३	४९	६.५८	५.३४	९.३७	२.३९	मकर	कु. ०९/३४ तक शि. २३/४९ तक, सूर्य अनुराधा में १२/५६ से, र. १२/५६ से २३/४९ तक
२०	मं	७	०८	२३	ध	२३	४५	६.५९	५.३४	९.३८	२.३९	कुंभ ११/४२	याज. ०८/२३ तक, यु. ०८/२३ से २०/०४ तक, पं. ११/४२ से, मृ. २३/४५ स, व्या. २१/१७ से
२१	बु	८	०७	५५	श	२४	२२	७.००	५.३४	९.३९	२.३८	कुंभ	पं., र. २४/२२ से, व्या. २०/०२ तक
२२	गु	९	०८	१२	पू.भा.	०१	४०	७.०१	५.३४	९.३९	२.३८	मीन १८/१४	पं., र. अहोरात्र
२३	शु	१०	०९	०९	उ.भा.	०३	३३	७.०२	५.३४	९.४०	२.३८	मीन	पं., म. २१/५२ से, र. ०३/३३ तक, अ. ०३/३३ से
२४	श	११	१०	४१	रे	०५	५५	७.०३	५.३४	९.४१	२.३८	मेष ०५/५५	म. १०/४१ तक, पं. ०५/५५ तक, व्या. १९/२२ से
२५	र	१२	१२	४१	अ	०	०	७.०४	५.३४	९.४१	२.३७	मेष	व्या. १९/५२ तक
२६	सो	१३	१५	०१	अ	०८	३९	७.०५	५.३३	९.४२	२.३७	मेष	र. ०८/३९ से
२७	मं	१४	१७	३६	भ	११	३७	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	वृष १८/३३	र. ११/३७ तक, म. १७/३६ से
२८	बु	१५	२०	१७	कृ	१४	४३	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	वृष	सि. १४/४३ तक, म. ०६/५६ तक, कु. २०/१७ से चातुर्मासिक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२९	गु	१	२२	५८	रो	१७	५०	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	वृष	मृ. १७/५० से
३०	शु	२	०१	३३	मृ	२०	५२	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	मि. ०७/२२	राज. २०/५२ तक
१	श	३	०३	५५	आ	२३	४३	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	मिथुन	भ. १४/४६ से ०३/५५ तक
२	र	४	०५	५८	पुन	०२	१६	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	कर्क १९/४०	सूर्य ज्येष्ठा में १७/१८ से
३	सो	५	०	०	पु	०४	२६	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	कर्क	
४	मं	५	०७	३५	आ	०६	०६	७.०९	५.३४	९.४५	२.३६	सिंह ०६/०६	र. और कु. ०६/०६ से, वै. ०१/३४ से
५	बु	६	०८	३८	म	०	०	७.१०	५.३४	९.४६	२.३६	सिंह	र. अहोरात्र, कु. ०८/३८ तक, भ. ०८/३८ से २०/५६ तक, वै. २४/५३ तक
६	गु	७	०९	०४	म	०७	०९	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	सिंह	र. ०७/०९ तक
७	शु	८	०८	४८	पू.फा.	०७	३१	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	क. १३/३०	सि. ०७/३१ तक
८	श	९ १०	०७ ०६	४९ ०८	उ.फा. ह	०७ ०६	१२ ११	७.१२	५.३४	९.४८	२.३५	कन्या	मृ. और यम. ०७/१२ से ०६/११ तक, भ. १९/०३ से ०६/०८ तक, भगवान महावीर दीक्षा कल्याणक दिवस
९	र	११	०३	४७	चि	०४	३२	७.१३	५.३४	९.४८	२.३५	तुला १७/२६	राज. ०३/४७ से ०४/३२ तक
१०	सो	१२	२४	५२	स्वा	०२	१९	७.१४	५.३४	९.४९	२.३५	तुला	यम. ०२/१९ से
११	मं	१३	२१	३३	वि	२३	४२	७.१५	५.३४	९.५०	२.३५	वृ. १८/३३	भ. २१/३३ से
१२	बु	१४	१७	५७	अ	२०	४९	७.१६	५.३५	९.५०	२.३५	वृश्चिक	अ. २०/४९ तक, भ. ०७/४६ तक
१३	गु	३०	१४	१३	ज्ये	१७	४९	७.१६	५.३५	९.५१	२.३५	धन १४/४९	ज्या. १७/४९ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१४	शु	१ / २	१० / ०७	३२ / ०३	मू	१४	५५	७.१७	५.३५	६.५२	२.३४	धन	कु. १०/३२ तक, ज्वा. १०/३२ तक, राज. १४/५५ से
१५	श	३	०४	०१	पू.षा.	१२	१७	७.१८	५.३५	६.५२	२.३४	म. १७/४८	र. १२/१७ से २०/१५ तक, सूर्य मूल और धनु में २०/१५ से, मलमास प्रारंभ
१६	र	४	०१	३२	उ.षा.	१०	०५	७.१८	५.३६	६.५२	२.३४	मकर	र. १०/०५ से, भ. १४/४२ से ०१/३२ तक, व्या. ०९/११ से ०६/०१ तक
१७	सो	५	२३	४४	श्र	०८	२८	७.१९	५.३६	६.५३	२.३४	कुंभ १९/५६	कु. और सि. ०८/२८ तक, र. ०८/२८ तक, पं. १९/५६ से
१८	मं	६	२२	४५	ध	०७	३५	७.१९	५.३७	६.५४	२.३४	कुंभ	पं., र. ०७/३५ से, मृ. ०७/३५ से
१९	बु	७	२२	३७	श	०७	३१	७.२०	५.३७	६.५४	२.३४	मीन ०३/०१	पं., र. ०७/३१ तक, भ. २२/३७ से, व्या. २४/२० से
२०	गु	८	२३	१९	पू.भा.	०८	१७	७.२०	५.३७	६.५४	२.३४	मीन	पं., भ. १०/५२ तक, व्या. २३/४३ तक
२१	शु	९	२४	४७	उ.भा.	०९	५०	७.२१	५.३८	६.५५	२.३४	मीन	पं., र. ०९/५० से, अ. ०९/५० से
२२	श	१०	०२	५१	रे	१२	०३	७.२१	५.३८	६.५५	२.३४	मेष १२/०३	र. अहोरात्र, पं. १२/०३ तक
२३	र	११	०५	२१	अ	१४	४७	७.२२	५.३९	६.५६	२.३४	मेष	र. १४/४७ तक, भ. १६/०३ से ०५/२१ तक, राज. ०५/२१ से
२४	सो	१२	०	०	भ	१७	४९	७.२२	५.३९	६.५६	२.३४	वृष २४/३६	
२५	मं	१२	०८	०४	कृ	२०	५९	७.२३	५.४०	६.५७	२.३४	वृष	र. २०/५९ से
२६	बु	१३	१०	४९	रो	२४	०६	७.२३	५.४०	६.५७	२.३४	वृष	र. २४/०६ तक
२७	गु	१४	१३	२८	मृ	०३	०३	७.२४	५.४१	६.५८	२.३४	मि. १३/३६	मृ. ०३/०३ तक, भ. १३/२८ से ०२/४२ तक
२८	शु	१५	१५	५२	आ	०५	४५	७.२४	५.४१	६.५८	२.३४	मिथुन	सूर्य पूर्वाषाढ़ा में २२/३० से, कु. ०५/४५ से पक्खी

www.jvbharati.org

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२९	श	१	१७	५८	पुन	०	०	७.२५	५.४२	९.५९	२.३४	कर्क ०१/३२	वै. ०५/३३ से
३०	र	२	१९	४३	पुन	०८	०७	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	कर्क	राज. ०८/०७ से, वै. ०५/३६ तक
३१	सो	३	२१	०४	पु	१०	०८	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	कर्क	भ. ०८/२७ से २१/०४ तक
१	मं	४	२२	००	आ	११	४६	७.२५	५.४४	१०.००	२.३५	सिंह ११/४६	कु. २२/०० से
२	बु	५	२२	२९	म	१२	५९	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	सिंह	कु. १२/५९ तक
३	गु	६	२२	२९	पू.फा.	१३	४४	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	क. १९/५१	र. १३/४४ से, भ. २२/२९ से
४	शु	७	२१	५६	उ.फा.	१३	५९	७.२७	५.४६	१०.०२	२.३५	कन्या	भ. १०/१७ तक, र. १३/५९ तक
५	श	८	२०	५१	ह	१३	४२	७.२७	५.४७	१०.०२	२.३५	तुला ०१/३१	मृ. और यम. १३/४२ तक
६	र	९	१९	१२	चि	१२	५२	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	तुला	भ. ०६/१२ से
७	सो	१०	१७	०२	स्वा	११	३०	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	वृ. ०४/११	कु. ११/३० से, यम. ११/३० से, भ. १७/०२ तक, पार्श्वनाथ जयंती
८	मं	११	१४	२२	वि	०९	४०	७.२७	५.४९	१०.०२	२.३५	वृश्चिक	कु. ०९/४० तक, राज. १४/२२ से
९	बु	१२	११	२०	अ / ज्ये	०७ / ०४	२५ / ५३	७.२७	५.५०	१०.०३	२.३६	धन ०४/५३	अ. ०७/२५ तक, राज. ०६/२५ तक, यम. ०४/५३ से
१०	गु	१३ / १४	०८ / ०४	०२ / ३७	मू.	०२	१३	७.२७	५.५१	१०.०३	२.३६	धन	भ. ०८/०२ से १८/२० तक, सूर्य उत्तराषाढ़ा में २४/३० से, व्या. ०२/०७ से
११	शु	३०	०१	१५	पू.षा.	२३	३४	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	म. ०४/५६	व्या. २२/०६ तक अमावस्या

www.jvbharati.org

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१२	श	१	२२	०६	उ.षा.	२१	०७	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	मकर	
१३	र	२	१९	२१	श्र	१९	०३	७.२७	५.५३	१०.०३	२.३६	कुंभ ०६/१४	राज.१९/०३ से, पं.०६/१४ से, सूर्य मकर में ०७/००से, मलमास समाप्त
१४	सो	३	१७	०९	ध	१७	३३	७.२७	५.५४	१०.०४	२.३७	कुंभ	पं., भ. ०४/२० से, र. १७/३३ से, व्या. ११/३५ से
१५	मं	४	१५	४२	श	१६	४७	७.२७	५.५५	१०.०४	२.३७	कुंभ	पं., मृ. १६/४७ तक, भ. १५/४२ तक, कु. १६/४७ से, र. १६/४७ तक, व्य. ०८/५९ तक
१६	बु	५	१५	०५	पू.भा.	१६	४९	७.२७	५.५६	१०.०४	२.३७	मीन १०/४६	पं., कु. १६/४९ तक, र. १६/४९ से
१७	गु	६	१५	२०	उ.भा.	१७	४२	७.२७	५.५७	१०.०५	२.३८	मीन	पं., र. १७/४२ तक
१८	शु	७	१६	२६	रे	१९	२५	७.२७	५.५८	१०.०५	२.३८	मेष १६/२६	अ. १९/२५ तक, भ. १६/२६ से ०५/१६ तक, पं. १९/२५ तक
१९	श	८	१८	१७	अ	२१	४९	७.२७	५.५९	१०.०५	२.३८	मेष	र. २१/४९ से
२०	र	९	२०	४१	भ	२४	४२	७.२६	५.५९	१०.०५	२.३८	मेष	र. अहोरात्र
२१	सो	१०	२३	२४	कृ	०३	५०	७.२५	६.००	१०.०४	२.३९	वृष ०३/५०	र. ०३/५० तक, कु. ०३/५० से
२२	मं	११	०२	०९	रो	०६	५९	७.२४	६.००	१०.०३	२.३९	वृष	भ. १२/४७ से ०२/०९ तक, कु. ०२/०९ तक, राज. ०६/५९ से
२३	बु	१२	०४	४५	मृ	०	०	७.२४	६.०१	१०.०३	२.३९	मि. २०/३०	सूर्य श्रवण में ०२/४७ से, राज. ०४/४५ तक
२४	गु	१३	०७	००	मृ	०९	५६	७.२४	६.०२	१०.०३	२.३९	मिथुन	मृ. ०९/५६ तक, वै. ०९/२४ से
२५	शु	१४	०	०	आ	१२	३३	७.२४	६.०३	१०.०३	२.४०	मिथुन	र. १२/३३ से, वै. ०९/५६ तक
२६	श	१४	०८	४८	पुन	१४	४५	७.२३	६.०३	१०.०३	२.४१	कर्क १४/४५	भ. ०८/४८ से २१/३२ तक, र. १४/४५ तक, गणतंत्र दिवस, पक्खी
२७	र	१५	१०	०९	पु	१६	३०	७.२२	६.०४	१०.०३	२.४१	कर्क	राज. १०/०९ तक

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२८	सो	१	११	०१	आ	१७	४८	७.२२	६.०५	१०.०३	२.४१	सिंह १७/४८	
२९	मं	२	११	२८	म	१८	४२	७.२२	६.०६	१०.०३	२.४१	सिंह	राज. १८/४२ से, म. २३/३३ से
३०	बु	३	११	३२	पू.फा.	१९	१३	७.२२	६.०७	१०.०३	२.४१	क. ०१/१८	म. ११/३२ तक, राज. ११/३२ तक
३१	गु	४	११	१३	उ.फा.	१९	२४	७.२२	६.०८	१०.०३	२.४१	कन्या	
१	शु	५	१०	३४	ह	१९	१६	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	तुला २७/०४	कु. १९/१६ तक, र. १९/१६ से
२	श	६	०९	३५	चि	१८	४७	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	तुला	भ. ०९/३५ से २०/४७ तक, र. १८/४७ तक, सि. १८/४७ से
३	र	७/८	०८/०६	१५/३४	स्वा	१७	५८	७.२१	६.१०	१०.०३	२.४२	तुला	
४	सो	९	०४	३३	वि	१६	४९	७.२१	६.११	१०.०३	२.४२	वृ. ११/०८	यम. १६/४९ तक
५	मं	१०	०२	१३	अ	१५	२०	७.२०	६.१२	१०.०३	२.४३	वृश्चिक	भ. १५/२५ से ०२/१३ तक, सूर्य धनिष्ठा में ०६/०१ से, व्या. १६/१९ से
६	बु	११	२३	३८	ज्ये	१३	३४	७.१९	६.१३	१०.०३	२.४४	धन १३/३४	कु. १३/३४ से २३/३८ तक, यम. १३/३४ से, व्या. १३/०४ तक
७	गु	१२	२०	५३	मू	११	३६	७.१९	६.१४	१०.०३	२.४४	धन	
८	शु	१३	१८	०५	पू.षा.	०९	३१	७.१८	६.१५	१०.०२	२.४४	म. १५/००	भ. १८/०५ से ०४/४० तक, व्य. ०२/४२ से
९	श	१४	१५	२१	उ.षा./श्र	०७/०६	२८/३५	७.१७	६.१६	१०.०२	२.४५	मकर	व्य. २३/१५ तक
१०	र	३०	१२	५२	ध	०४	०४	७.१६	६.१७	१०.०१	२.४५	कुंभ १६/४६	पं. १६/४६ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
११	सो	१	१०	४७	श	०३	०२	७.१५	६.१७	१०.००	२.४६	कुंभ	पं.
१२	मं	२	०९	१५	पू.भा.	०२	४०	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	मीन २०/४१	पं., सूर्य कुंभ में २०/०१ से, र. और राज. ०२/४० से, सि. ०२/४० से
१३	बु	३	०८	२५	उ.भा.	०३	०१	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	मीन	पं., राज. ०८/२५ तक, म. २०/१७ से, र. ०३/०१ तक
१४	गु	४	०८	२२	रे	०४	१०	७.१३	६.१९	९.५९	२.४७	मेष ०४/१०	म. ०८/२२ तक, पं. ०४/१० तक, र. ०४/१० से
१५	शु	५	०९	०७	अ	०६	०४	७.१२	६.२०	९.५९	२.४७	मेष	कु. ०६/०४ तक, र. ०६/०४ तक, बसंत पंचमी
१६	श	६	१०	३९	भ	०	०	७.१२	६.२१	९.५९	२.४७	मेष	
१७	र	७	१२	४८	भ	०८	३७	७.११	६.२१	९.५९	२.४८	वृष १२/१९	राज. ०८/३७ तक, ज्वा. १२/४८ से, म. १२/४८ से ०२/०२ तक, १४९वां मर्यादा महोत्सव
१८	सो	८	१५	२१	कृ	११	३४	७.१०	६.२२	९.५८	२.४८	वृष	ज्वा. ११/३४ तक, र. ११/३४ से, ज्वा. १५/२१ से, वै. १३/२३ से
१९	मं	९	१८	०२	रो	१४	४०	७.१०	६.२३	९.५८	२.४८	मि. ०४/१३	र. १०/२८ तक, सूर्य शतभिषा में १०/२८ से, ज्वा. १४/४० तक र. १४/४० से, वै. १४/२१ तक
२०	बु	१०	२०	३५	मृ	१७	४२	७.०९	६.२३	९.५७	२.४८	मिथुन	र. अहोरात्र
२१	गु	११	२२	४६	आ	२०	२४	७.०८	६.२४	९.५७	२.४९	मिथुन	म. ०९/४४ से २२/४६ तक, र. २०/२४ तक, सि. २०/२४ से
२२	शु	१२	२४	२७	पुन	२२	३७	७.०७	६.२४	९.५६	२.४९	कर्क १६/०७	राज. २२/३७ से २४/२७ तक
२३	श	१३	०१	३२	पु	२४	१६	७.०६	६.२५	९.५६	२.५०	कर्क	र. २४/१६ से
२४	र	१४	०२	०१	आ	०१	२१	७.०५	६.२५	९.५५	२.५०	सिंह ०१/२१	र. ०१/२१ तक, यम. ०१/२१ से, म. ०२/०१ से
२५	सो	१५	०१	५६	म	०१	५४	७.०४	६.२६	९.५४	२.५१	सिंह	म. १४/०२ तक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२६	मं	१	०१	२४	पू.फा.	०१	५९	७.०३	६.२७	९.५४	२.५२	सिंह	राज. ०१/२४ से ०१/५९ तक
२७	बु	२	२४	२८	उ.फा.	०१	४२	७.०२	६.२७	९.५३	२.५२	क. ०७/१७	
२८	गु	३	२३	१३	ह	०१	०७	७.०१	६.२८	९.५३	२.५२	कन्या	भ. ११/५२ से २३/१३ तक
१	शु	४	२१	४५	चि	२४	१८	६.५९	६.२९	९.५२	२.५३	तुला १२/४४	
२	श	५	२०	०६	स्वा	२३	१९	६.५८	६.३०	९.५१	२.५३	तुला	सि. २३/१९ तक, र. २३/१९ से, व्या. ०२/०८ से
३	र	६	१८	१९	वि	२२	१२	६.५७	६.३०	९.५०	२.५३	वृष १५/३०	भ. १८/१९ से ०५/२२ तक, र. २२/१२ तक, राज. और मृ. २२/१२ से, व्या. २३/२७ तक
४	सो	७	१६	२४	अ	२०	५८	६.५६	६.३०	९.५०	२.५३	वृष	सूर्य पूर्वाभाद्रपद में १६/५३ से, र. १६/५३ से २०/५८ तक
५	मं	८	१४	२२	ज्ये	१९	३९	६.५५	६.३१	९.४९	२.५४	धन १९/३९	
६	बु	९	१२	१७	मू	१८	१५	६.५४	६.३१	९.४८	२.५४	धन	यम. १८/१५ तक, कु. १२/१७ से १८/१५ तक, भ. २३/१२ से, व्य. १५/०० से
७	गु	१०	१०	०८	पू.षा.	१६	४९	६.५३	६.३२	९.४८	२.५५	म. २२/२७	भ. १०/०८ तक, व्य. १२/०४ तक
८	शु	११ / १२	०८ / ०५	०० / ५७	पू.षा.	१५	२५	६.५२	६.३३	९.४७	२.५५	मकर	
९	श	१३	०४	०६	श्र	१४	०८	६.५१	६.३४	९.४७	२.५६	कुंभ ०१/३४	पं. ०१/३४ से, भ. ०४/०६ से
१०	र	१४	०२	३२	ध	१३	०४	६.५०	६.३४	९.४६	२.५६	कुंभ	पं., भ. १५/१६ तक
११	सो	३०	०१	२३	श	१२	२१	६.४९	६.३४	९.४५	२.५६	मीन ०५/०६	पं., कु. ०१/२३ से फाल्गुनी

दिनांक	वार	तिथि	घंटे	मिनट	नक्षत्र	घंटे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१२	मं	१	२४	४६	पू.भा.	१२	०५	६.४८	६.३५	८.४५	२.५७	मीन	पं., कु. १२/०५ तक, सि. १२/०५ से, राज. २४/४६ से
१३	बु	२	२४	४६	उ.भा.	१२	२३	६.४७	६.३५	८.४४	२.५७	मीन	पं., राज. १२/२३ तक
१४	गु	३	०१	२६	रे	१३	१९	६.४६	६.३६	८.४४	२.५७	मेष १३/१९	पं. १३/१९ तक, र. १३/१९ से, सूर्य मीन में १६/५८ से, मलमास आरम्भ
१५	शु	४	०२	४६	अ	१४	५५	६.४५	६.३७	८.४३	२.५८	मेष	भ. १४/०१ से ०२/४६ तक, र. १४/५५ तक, ज्वा. ०२/४६ से, वै. १९/१७ से
१६	श	५	०४	४२	भ	१७	०७	६.४४	६.३८	८.४२	२.५९	वृष २१/४५	ज्वा. १७/०७ तक, र. १७/०७ से, वै. १९/३४ तक
१७	र	६	०	०	कृ	१९	४९	६.४३	६.३९	८.४२	२.५९	वृष	र. १९/४९ तक, सूर्य उत्तराभाद्रपद में ०१/१६ से, र. ०१/१६ से
१८	सो	६	०७	०५	रो	२२	४९	६.४२	६.३९	८.४१	२.५९	वृष	कु. ०७/०५ तक, र. २२/४९ तक, अ. २२/४९ से
१९	मं	७	०९	४०	मृ	०१	५३	६.४१	६.३९	८.४०	२.५९	मि. १५/५१	राज. ०९/४० तक, भ. ०९/४० से २२/५७ तक, यम. ०१/५३ से
२०	बु	८	१२	१२	आ	०४	४५	६.४०	६.३९	८.४०	३.००	मिथुन	र. ०४/४५ से
२१	गु	९	१४	२७	पुन	०	०	६.३९	६.४०	८.३९	३.००	कर्क २४/३८	र. और सि. अहोरात्र
२२	शु	१०	१६	११	पुन	०७	१२	६.३८	६.४१	८.३९	३.०१	कर्क	र. अहोरात्र, कु. ०७/१२ तक, भ. ०४/४९ से
२३	श	११	१७	१७	पु	०९	०४	६.३६	६.४१	८.३७	३.०१	कर्क	र. ०९/०४ तक, भ. १७/१७ तक
२४	र	१२	१७	४०	आ	१०	१७	६.३५	६.४२	८.३७	३.०२	सिंह १०/१७	यम. १०/१७ से
२५	सो	१३	१७	२२	म	१०	४९	६.३३	६.४३	८.३६	३.०३	सिंह	र. १०/४९ से
२६	मं	१४	१६	२६	पू.फा.	१०	४२	६.३२	६.४३	८.३५	३.०३	क. १५/३६	र. १०/४२ तक, भ. १६/२६ से ०३/४५ तक, होलिका, चातुर्मासिक पक्खी
२७	बु	१५	१४	५८	उ.फा.	१०	०४	६.३१	६.४४	८.३४	३.०३	कन्या	कु. १४/५८ से, धूलेटी

www.jvbharati.org

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२८	गु	१	१३	०५	ह	०९	००	६.३०	६.४४	९.३४	३.०३	तुला २०/३७	व्या. १३/५६ से
२९	शु	२	१०	५६	चि / स्वा	०७ / ०६	३५ / ०२	६.२९	६.४५	९.३३	३.०४	तुला	राज. ०७/३६ तक, भ. २१/४७ से, व्या. ११/०१ तक
३०	श	३ / ४	०८ / ०६	३६ / १०	वि	०४	२१	६.२८	६.४५	९.३२	३.०४	वृ. ३२/४६	भ. ०८/३५ तक
३१	र	५	०३	४५	अ	०२	४१	६.२७	६.४५	९.३१	३.०४	वृश्चिक	मृ. ०२/४१ तक, सूर्य रेवती में १२/१२ से, व्य. ०१/४६ से
१	सो	६	०१	२४	ज्ये	०१	०४	६.२६	६.४६	९.३१	३.०५	धन ०१/०४	म. और र. ०१/०४ से, कु. ०१/०४ से ०१/२४ तक, व्य. २२/४१ तक
२	मं	७	२३	११	मू	२३	३६	६.२५	६.४६	९.३०	३.०५	धन	भ. १२/१६ तक, र. २३/३६ तक
३	बु	८	२१	०८	पू.षा.	२२	१७	६.२४	६.४६	९.२९	३.०५	म. ०३/११	भगवान ऋषभ दीक्षा दिवस, वर्षीतप प्रारंभ
४	गु	९	१९	१८	उ.षा.	२१	११	६.२३	६.४७	९.२९	३.०६	मकर	भ. ०६/२८ से
५	शु	१०	१७	४२	श्र	२०	२१	६.२२	६.४७	९.२८	३.०६	मकर	कु. २०/२१ तक, भ. १७/४२ तक
६	श	११	१६	२४	ध	१९	४७	६.२१	६.४७	९.२७	३.०६	कुंभ ०८/०३	पं. ०८/०२ से
७	र	१२	१५	२६	श	१९	३५	६.१९	६.४८	९.२६	३.०७	कुंभ	पं.
८	सो	१३	१४	५२	पू.भा.	१९	४६	६.१८	६.४८	९.२५	३.०७	मीन १३/४१	पं., भ. १४/५२ से ०२/४५ तक
९	मं	१४	१४	४५	उ.भा.	२०	२३	६.१७	६.४८	९.२५	३.०८	मीन	पं., सि. २०/२३ तक, वै. ०३/३५ से
१०	बु	३०	१५	०७	रे	२१	३१	६.१६	६.४९	९.२४	३.०८	मेष २१/३१	पं. २१/२१ तक, कु. और मृ. २१/३१ से, वै.०३/०० तक पक्खी

www.jvbharati.org

		कोलकाता		दिल्ली		मुम्बई		चेन्नई		बैंगलोर		जोधपुर	
महीना		सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
जनवरी	१	६.१७	५.०३	७.१४	५.३५	७.१२	६.१२	६.२९	५.५४	६.४२	६.०४	७.२८	५.५२
	१५	६.१९	५.१२	७.१५	५.४६	७.१५	६.२१	६.३४	६.०३	६.४६	६.१२	७.३१	६.०१
फरवरी	१	६.१६	५.२४	७.१०	६.००	७.१३	६.३१	६.३८	६.२१	६.४७	६.२१	७.२६	६.१५
	१५	६.०९	५.३२	७.००	६.११	७.०८	६.३८	६.३०	६.१६	६.४३	६.२५	७.२७	६.२५
मार्च	१	५.५८	५.४०	६.४७	६.२०	६.५८	६.४४	६.२४	६.१८	६.३६	६.२८	७.०५	६.३३
	१५	५.४६	५.४६	६.३२	६.२९	६.४८	६.४८	६.१६	६.२०	६.२७	६.३१	६.५१	६.४१
अप्रैल	१	५.३०	५.५२	६.१२	६.३९	६.३३	६.५२	६.०५	६.२१	६.१७	६.३१	६.३४	६.५०
	१५	५.१७	५.५७	५.५६	६.४७	६.२२	६.५६	५.५७	६.२२	६.०८	६.३२	६.१९	६.५६
मई	१	५.०४	६.०३	५.४१	६.५६	६.११	७.०२	५.४९	६.२४	५.५९	६.३५	६.०४	७.०५
	१५	४.५७	६.०९	५.३१	७.०४	६.०५	७.०६	५.४५	६.२८	५.५४	६.३८	५.५५	७.१२
जून	१	४.५२	६.१७	५.२४	७.१४	६.०१	७.१२	५.४३	६.३२	५.५२	६.४२	५.४९	७.२०
	१५	४.५२	६.२२	५.२३	७.२०	६.०१	७.१७	५.४५	६.३७	५.५३	६.४७	५.४८	७.२६
जुलाई	१	४.५५	६.२५	५.२७	७.२३	६.०५	७.२०	५.४८	६.३९	५.५८	६.५०	५.५१	७.२९
	१५	५.०१	६.२४	५.३३	७.२१	६.१०	७.१९	५.५२	६.३९	६.०१	६.५०	५.५८	७.२७
अगस्त	१	५.०८	६.१७	५.४२	७.१२	६.१६	७.१४	५.५५	६.३६	६.०५	६.४७	६.०५	७.२१
	१५	५.१३	६.०८	५.५०	७.०१	६.२०	७.०६	५.५८	६.२९	६.०८	६.४०	६.१३	७.११
सितम्बर	१	५.१९	५.५४	५.५९	६.४३	६.२४	६.५३	५.५९	६.१९	६.०९	६.३१	६.१९	६.५५
	१५	५.२३	५.४०	६.०६	६.२६	६.२६	६.४१	५.५८	६.०९	६.०९	६.२१	६.२४	६.४०
अक्टूबर	१	५.२८	५.२४	६.१४	६.०७	६.२९	६.२७	५.५८	५.५८	६.१०	६.१०	६.३३	६.२२
	१५	५.३३	५.१२	६.२२	५.५२	६.३३	६.१६	५.५९	५.४९	६.११	६.०१	६.४०	६.०७
नवम्बर	१	५.४२	४.५९	६.३३	५.३६	६.३९	६.०५	६.०२	५.४२	६.१४	५.५४	६.४९	५.५३
	१५	५.४९	४.४३	६.४४	५.२७	६.४६	६.००	६.०७	५.३९	६.२०	५.५०	७.००	५.४४
दिसंबर	१	६.००	४.५१	६.५६	५.२४	६.५६	६.००	६.१३	५.४१	६.२६	५.५१	७.११	५.४२
	१५	६.०९	४.५४	७.०६	५.२६	७.०४	६.०४	६.२२	५.४६	६.३४	५.५६	७.२१	५.४३

नक्षत्र से राशि और नामाक्षर का ज्ञान

जिस दिन बालक का जन्म हो, उस समय का नक्षत्र पंचांग में देखें, फिर नक्षत्र के अनुसार नाम का अक्षर और राशि नीचे लिखी तालिका से जानें–

अक्षर	नक्षत्र	राशि	अक्षर	नक्षत्र	राशि
चू चे चो ला	अश्विनी	मेष	पे पो, रा री	चित्रा	कन्या-२, तुला-२
ली लू ले लो	भरणी	मेष	रू रे रो ता	स्वाति	तुला
आ, ई उ ए	कृतिका	मेष-१, वृष-३	ती तू ते, तो	विशाखा	तुला-३, वृश्चिक-१
ओ वा वी वू	रोहिणी	वृष	ना नी नू ने	अनुराधा	वृश्चिक
वे वो, क की	मृगशिरा	वृष-२, मिथुन-२	नो या यी यु	ज्येष्ठा	वृश्चिक
कु घ ङ छ	आर्द्रा	मिथुन	ये यो भा भी	मूल	धन
के को ह, ही	पुनर्वसु	मिथुन-३, कर्क-१	भू धा फा ढा	पूर्वाषाढ़ा	धन
हु हे हो डा	पुष्य	कर्क	भे, भो जा जी	उत्तराषाढ़ा	धन-१, मकर-३
डी डू ड डो	आश्लेषा	कर्क	खा खू खे खो	श्रवण	मकर
मा मी मू मे	मघा	सिंह	गा गी, गू गे	धनिष्ठा	मकर-२, कुम्भ-२
मो टा टी टू	पूर्वाफाल्गुनी	सिंह	गो सा सि सु	शतभिषा	कुम्भ
टे, टो प पी	उत्तराफाल्गुनी	सिंह-१, कन्या-३	से सो द, दि	पूर्वाभाद्रपद	कुम्भ-३, मीन-१
पू ष णा ठ	हस्त	कन्या	दू थ झ ञ	उत्तराभाद्रपद	मीन
			दे दो चा ची	रेवती	मीन

राशि स्वामी–मेष और वृश्चिक का मंगल, वृषभ और तुला का शुक्र, मिथुन और कन्या का बुध, कर्क का चन्द्र, सिंह का सूर्य, धन और मीन का गुरु, मकर और कुंभ का स्वामी शनि होता है।

गुरु-दर्शन के लिए नक्षत्र

रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, श्रवण, अनुराधा तथा शुभ वार।

www.jvbharati.org

घात-चक्रम्

घात तिथि घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जये प्राज्ञैरन्य कर्मसुशोभनम्।।

राशि–	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास–	कार्तिक	मिगसर	आषाढ़	पोष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि–	१-६-११	५-१०-१५	१-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार–	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगल वार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र–	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात प्रहर–	१	४	३	१	१	१	१	१	१	४	३	४
पु. घात चंद्र	मेष	कन्या	कुंभ	सिंह	मकर	मिथुन	धन	वृषभ	मीन	सिंह	धन	कुंभ
स्त्री घात चंद्र	मेष	धन	धन	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धन	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुंभ

आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा घोषित आगामी चातुर्मास एवं मर्यादा महोत्सव

चतुर्मास (वर्ष)	स्थान
सन् २०१३	लाडनूं
सन् २०१४	दिल्ली
सन् २०१५	विराटनगर (नेपाल)
सन् २०१६	गुवाहाटी (असम)
सन् २०१७	कोलकाता

मर्यादा महोत्सव (वर्ष)	स्थान
सन् २०१४ मर्यादा महोत्सव	गंगाशहर
सन् २०१५ मर्यादा महोत्सव	कानपुर

www.jvbharati.org

यात्रा में चंद्र विचार

मेषे च सिंहे धन पूर्व भागे, वृषे च कन्या मकरे च याम्ये।
युग्मे तुले कुंभसु पश्चिमायां, कर्कालि मीने दिशिचोत्तरस्याम्॥

अर्थ– मेष, सिंह, धन पूर्व। वृष कन्या, मकर दक्षिण।
मिथुन, तुला, कुंभ पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन, उत्तर।

फलम्– सम्मुखे अर्थलाभाय, दक्षिणे सुखसंपदा।
पृष्ठे तु प्राणनाशाय, वामे चंद्रे धनक्षयः॥

अर्थ– सम्मुख का चन्द्रमा, धनदाता दाहिना सुखदाता।
पीठ का प्राण-हर्ता और बायां धन-हर्ता।

यात्रा में योगिनी विचार

ईशान ३०/८	पूर्व १/९	अग्नि ३/११
उत्तर २/१०	योगिनी सुखदा वामे। पृष्ठे वांछित दायिनी॥ दक्षिणे धनहंत्री च। सम्मुखे मरणप्रदा॥	दक्षिण ५/१३
७/१५ वायव्य	६/१४ पश्चिम	४/१२ नैऋत्य

दिशाशूल-विचार-चक्रम्

	पूर्व चन्द्र, शनि	
उत्तर मंगल, बुध	दिशाशूल ले जावो वामे। राहु योगिनी पूठ॥ सम्मुख लेवै चन्द्रमा। लावे लक्ष्मी लूट॥	दक्षिण गुरु
	रवि, शुक्र पश्चिम	

काल-राहू-विचार-चक्रम्

ईशान	पूर्व शनि	अग्नि शुक्र
उत्तर रवि	अर्कोत्तरे वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैऋते च याम्ये गुरौ वह्निदिशा च शुक्रे मंदे च पूर्वे प्रवदंति काल।	दक्षिण गुरु
सोम वायव्य	मंगल पश्चिम	बुध नैऋत्य

अभिजित मुहूर्त–दिनमान का आधा करने से जो समय प्राप्त हो उस समय से २४ मिनट पहले और २४ मिनट बाद तक अभिजित मुहूर्त रहता है, जो नगर प्रवेश आदि में श्रेष्ठ माना जाता है। इस मुहूर्त का बुधवार के दिन निषेध है।

www.jvbharati.org

सुयोग-कुयोग चक्र

योग	तिथि या नक्षत्र	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि	तिथि			३,८,१३ (जया)	२,७,१२ (भद्रा)	५,१०,१५ (पूर्णा)	१,६,११ (नंदा)	४,९,१४ (रिक्ता)
	–नक्षत्र	मूल	श्रवण	उ. भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू. फा.	स्वाति
अमृतसिद्धि	–नक्षत्र	हस्त	मृगशिरा	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थसिद्धि	–नक्षत्र	मू. ह. पुष्य अश्वि. रे. उत्तरा-३	अनु. श्र.रो. कृ. पुष्य	उ.भा.अश्वि. कृ. आश्ले.	ह. कृ.रो. मृ. अनु.	पुन.पुष्य.रे. अनु. अश्वि.	अश्वि.रे. श्र. पुन. अनु.	रो. स्वा. श्र.
आनन्द	–नक्षत्र	अश्वि.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उ. षा.	श.
मृत्यु	तिथि–	१,६,११	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	२,७,१२	४,९,१४	५,१०,१५,३०
	–नक्षत्र	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त.
कालयोग	–नक्षत्र	भ.	आर्द्रा	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पू. भा.

विशेष सुयोग (१) २,३,७,१२,१५ तिथि, रविवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार तथा भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पू. षा, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, उ.भा. नक्षत्र–इनमें तीनों का सुयोग मिलने पर राजयोग बनता है, जो विशेष सिद्धि-दायक है।

(२) १,५,६,१०,११ तिथि, सोम, मंगल, बुध, शुक्रवार तथा अश्वि., रो., पुन., मघा, ह., वि., मू., श्र., पू. भा. नक्षत्र–इनमें तीनों का संयोग मिलने पर कुमार योग बनता है, जो शुभ है।

विशेष कुयोग–यदि एकम तिथि को मूल नक्षत्र हो, पंचमी को भरणी हो, अष्टमी को कृतिका हो, नवमी को रोहिणी हो, दशमी को आश्लेषा हो तो ज्वालामुखी योग बनता है, जो सब कार्यों में वर्जित है।

ज्ञातव्य– (क) सुयोग और कुयोग दोनों होने पर कुयोग का फल नहीं रहता।

(ख) अभिजित नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण तथा श्रवण का प्रथम पन्द्रहवां भाग अभिजित नक्षत्र होता है।

पोरसी प्रमाण

दिनांक	पग	आंगुल	घंटा	मिनट
२१ अप्रैल	२	८	३	१२
२२ मई	२	४	३	२२
२२ जून	२	०	३	२७
२४ जुलाई	२	४	३	२२
२४ अगस्त	२	८	३	१२
२३ सितम्बर	३	०	३	०
२३ अक्टूबर	३	४	२	४८
२१ नवम्बर	३	८	२	३८
२२ दिसम्बर	४	०	२	३४
२० जनवरी	३	८	२	३८
२१ फरवरी	३	४	२	४८
२० मार्च	३	०	३	०

राहू-काल

वार	समय	राहू-काल बेला
रवि	सायं	४-३० से ६-००
सोम	प्रातः	७-३० से ९-००
मंगल	मध्याह्न	३-०० से ४-३०
बुध	मध्याह्न	१२-०० से १-३०
गुरु	मध्याह्न	१-३० से ३-००
शुक्र	प्रातः	१०-३० से १२-००
शनि	प्रातः	९-०० से १०-३०

टिप्पण :–राहू-काल (समय) में यात्रा करना वर्जित है।

दिन के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात्रि के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

www.jvbharati.org

वही व्यक्ति सफल हो सकता है, जो अपनी अर्हता का विकास करता है।

– आचार्य महाप्रज्ञ

अतीत का पुरुषार्थ ही वर्तमान व भविष्य का भाग्य बन जाता है।

– आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

Rajendra Kumar Bengani

JABAL AL LAWZ TRADING EST
P. O. Box 31163, DUBAI, U.A.E.
Tel : +971 4 2254152 Fax : +971 4 225 5825 E-mail : oswal@eim.ae

www.jvbharati.org

आलोचना का जवाब जबान से नहीं महत्त्वपूर्ण कार्यों से दो।

— आचार्य महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमणजी के वर्ष २०१२ के
अमृत भूमि आमेट मर्यादा महोत्सव के अवसर पर
शत-शत वंदन-अभिवंदन

श्रद्धावनत

'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' भंवरलाल लोढ़ा

पारसमल, पुखराज, गजेन्द्र लोढ़ा

'कल्याण मित्र' सलिल लोढ़ा (०९८२०१४१३०२)

आमेट - मुलुंड (मुंबई)

www.jvbharati.org

उच्च शिक्षा का एक अद्वितीय केन्द्र

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं द्वारा उच्च शिक्षा के साथ-साथ अनेकान्त, अहिंसा, सहिष्णुता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के उच्च आदर्शों को मानवजाति में स्थापित करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास हो रहा है। गुरुदेव श्री तुलसी प्राच्य विद्या के लिए समर्पित इस विश्वविद्यालय के प्रथम संवैधानिक अनुशास्ता (नैतिक एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शक) बने। आचार्य महाप्रज्ञ इस विश्वविद्यालय के द्वितीय एवं आचार्य महाश्रमण वर्तमान अनुशास्ता हैं एवं श्री सुरेन्द्र चोरड़िया कुलाधिपति हैं। कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा के कुशल एवं सक्षम नेतृत्व में विश्वविद्यालय विकास के नये-नये प्रतिमान स्थापित कर रहा है।

पाठ्यक्रम विवरण

नियमित पाठ्यक्रम -

(अ) स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम :

एम.ए. : 1. जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन, 2. संस्कृत, 3. प्राकृत 4. अहिंसा एवं शांति, 5. जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग, 6. समाज कार्य एवं 7. अंग्रेजी,

एम.फिल. : 8. जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन, 9. प्राकृत एवं जैनागम, 10. अहिंसा एवं शांति

11. **एम.एड.** (केवल महिलाओं के लिए) (प्रवेश राज्य सरकार के नियमानुसार)

(ब) स्नातक पाठ्यक्रम (केवल महिलाओं के लिए) :

12. बी.ए., 13. बी. कॉम, 14. बी.एड. (प्रवेश राज्य सरकार के नियमानुसार)

(स) डिप्लोमा पाठ्यक्रम (एक वर्षीय) :

(क) स्नातकोत्तर डिप्लोमा - 15. स्टडीज इन जैनिज्म, 16. एन.जी.ओ. मैनेजमेण्ट, 17. रूरल डेवलपमेण्ट, 18. प्रेक्षा योगा थेरेपी (18 माह),

(ख) स्नातक डिप्लोमा - 19. नेचरो पैथी, 20. बैंकिंग, 21. गृह-विज्ञान।

(द) प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम :

22. ग्राफिक्स कला, 23. पत्रकारिता एवं जनसंचार, 24. प्राकृत, 25. अंग्रेजी सम्भाषण, 26. जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग शिक्षा, 27. फाउण्डेशन इन आई.टी. कन्सेप्ट्स एण्ड स्किल्स (कम्प्यूटर), 28. जैन विद्या, 29. अहिंसा एवं शांति, 30. समाजकार्य।

पत्राचार पाठ्यक्रम

(अ) स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम :

एम.ए. : 1. जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन, 2. जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग, 3. शिक्षा, 4. हिन्दी 5. अंग्रेजी।

(ब) स्नातक पाठ्यक्रम

6. बी.ए., 7. बी. कॉम., 8. अतिरिक्त विषय से बी.ए., 9. बी.लिब, एवं आई. एस.सी (पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान), 10. बैचलर्स प्रपेटरी प्रोग्राम (बी.पी.पी.)

(स) प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम :

11. जैन धर्म तथा दर्शन (छः माह), 12. प्राकृत (छः माह) 13. ज्योतिष विज्ञान (छः माह)

14. जैन आर्ट एण्ड एस्थेटिक्स (छः माह), 15. ह्युमन राइटस (छः माह)

16. अण्डरस्टेंडिंग रीलिजन (त्रैमासिक), 17. अहिंसा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (त्रैमासिक)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें -

कुलसचिव, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय,

लाडनूं (राजस्थान)

दूरभाष : 01581-222110, 224332,222230

फैक्स : 223472

Website : http:/www.jvbi.ac.in

e-mail : registrar@jvbi.ac.in;

office@jvbi.ac.in

With Best Compliments From

Ratan Lal Budhmal Jodhraj Baid

RATANGARH

A B C I

ABCI INFRASTRUCTURES PVT. LTD.

ADMN. OFFICE : Club Road, Silchar 788001 (Assam)
Phone : (03842) 247957, 247471, Fax : 03842-236054 E-mail : silchar@abciinfra.com

REGD. OFFICE : 'Vasundra' 6th floor, Room No. 4 2/7, Sarat Bose Road, Kolkata - 700020
Phone : 40033072, 40033073, Fax : (033) 4003 3071 E-mail : kolkata@abciinfra.com

DELHI
204, South Delhi House
12, Zamrudhpur Community Centre
Kailash Colony, New Delhi - 110048
Ph. : 2923-4131,
Fax : (011) 2923-2405
E-mail : delhi@abciinfra.com

GUWAHATI
1/3, Macdonalt Tower, 1st Floor,
G.S. Road, Bhangaghar,
Guwahati 781005
Ph. : 2464054, Fax : (0361) 2458819
E-mail : guwahati@abciinfra.com

AIZAWL
Zarkhawt, Aizawl
Ph. : 234-8804, 234-1004
Fix : 234 3148
E-mail : aizawl@abciinfra.com

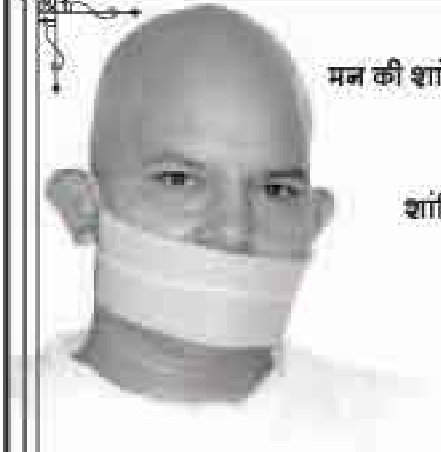

मन की शांति और सामंजस्य चाहते हो तो कषाय को उपशांत करो।
–आचार्य महाप्रज्ञ

शांति बनाए रखने के लिए सत्य को छोड़ देना उचित नहीं।
– आचार्य महाश्रमण

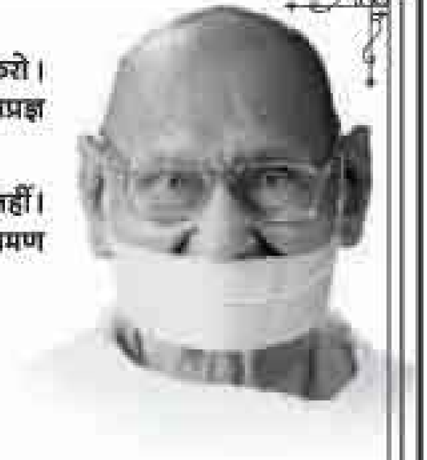

श्रद्धावनत

हेमराज श्यामसुखा

श्रीडूंगरगढ़ – बैंगलोर

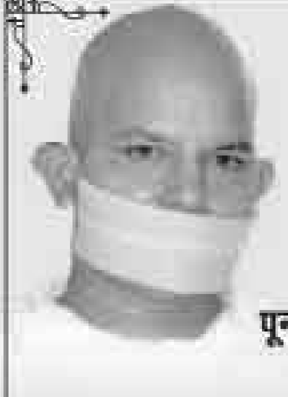

भाग्य की चिंता नहीं अच्छा पुरुषार्थ करो भाग्य स्वतः अच्छा हो जाएगा।

- आचार्य महाश्रमण

श्रद्धालु स्व. रेखचंद जी सिंघी की पुण्य स्मृति में

श्रद्धा, समर्पण एवं निष्ठा जिनका जीवन रस
उस पावन पथप्रेरक को
पूनमचंद अशोक कुमार सिंघी (किरण सिंघी) एवं समस्त सिंघी परिवार का नमन

अशोक सिंघी (किरण सिंघी)

श्रीडूंगरगढ़–जलगांव–दिल्ली–मुंबई–चैन्नई

98208-75799, 93244-73902

PRAKASH ACRYLIC (P) LTD.
70, Thota Muthiappan Street
(1st Floor) Chennai-1
Ph. : 044-25245016
www.prakashacrylic.com

ACRYLICS (INDIA)
3002/2, Chunamandi
Pahar Ganj, New Delhi-55
Ph. : 011-23582585
www.acrylicsindia.com

JYOTI PLASTICS
5, Ram Mandir Road,
Goregaon (W) Mumbai-4
Ph. : 022-26760115
www.polycarbonatesindia.com

शरीर नश्वर है, आत्मा अमर है। शरीर एक दिन छूटने वाला है।
नश्वर शरीर की सबसे बड़ी सार्थकता इसमें है
कि उससे अमर आत्मा का हित हो, वैसा काम किया जाए।

– आचार्य महाश्रमण

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के सायरा (राजस्थान)
पदार्पण के पावन अवसर पर
'संघभक्त' स्व. मनरूपजी भोगर के सुपुत्र

मीठालाल एस. भोगर

एवं समस्त भोगर परिवार की ओर से
शत-शत वन्दन–अभिवन्दन

शा. अम्बालाल मीठालाल
सायरा - सूरत

www.jvbharati.org

ॐ अर्हम्
अ.सि.आ.उ.सा. नमः

आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों में शत-शत वन्दन।

शुभकामनाओं सहित

चन्दनमल गुजरानी
नवरत्न, हीरा गुजरानी

गुजरानी ज्वैलर्स, जयपुर
2577111,2618202
9829055202,9314879077

गुजरानी इन्टरनेशनल, मुंबई
23679475,23635627
9820046298

जीवन विज्ञान

आचार्य महाप्रज्ञ प्रणीत 'जीवन विज्ञान' जीवन जीने की कला सिखाता है। स्वस्थ समाज रचना के लिए स्वस्थ एवं संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण की अपेक्षा है। व्यक्तित्व की समग्रता केवल बौद्धिक विकास में नहीं है, जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सर्वाधिक बल इसी पर दिया जा रहा है, समग्र विकास के लिए शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास भी आवश्यक है। जीवन विज्ञान बौद्धिक ज्ञान की उपेक्षा नहीं करता परन्तु इसके साथ व्यक्तित्व विकास के अन्य आयामों पर भी पर्याप्त बल देने की बात करता है। यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पूरक के रूप में जुड़कर व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः शिक्षा की सम्पूर्णता के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा में जीवन विज्ञान का समावेश हो।

जीवन विज्ञान के उद्देश्य

1. जीवन के परिष्कार द्वारा आध्यात्मिक और वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण करना।

2. जीवन विज्ञान, योग द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकास पर भावात्मक प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन करना।

3. जीवन के उन नियमों एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन एवं अन्वेषण करना, जिससे जीवन के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष का परिष्कार होता है।

4. स्वस्थ समाज की रचना के लिए ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों हेतु स्वस्थ जीवन की प्रायोगिक एवं अभ्यासात्मक प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत कर सके। साथ ही इसके माध्यम से वह समग्र एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में सहभागी बन सके।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षा के इस क्रांतिकारी आयाम को राष्ट्रव्यापी बनाने के लिए जीवन विज्ञान अकादमी प्रारम्भ से जैन विश्व भारती के अंतर्गत कार्यरत है। इस अकादमी के प्रयासों से देशभर में अनेक अकादमियां स्थापित हो चुकी हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में जीवन विज्ञान का विकास और प्रचार-प्रसार कर रही हैं।

जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम

जीवन विज्ञान के अंतर्गत व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य के समुचित विकास हेतु आधुनिक और प्राचीन विद्याओं के समावेश से परिपूर्ण अन्तर्विषयानुबंधी पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया है। विद्यालयीन स्तर पर जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम का प्रारूप निम्नानुसार है–

1. प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान।
2. प्रत्येक कालांश में विषय शिक्षण से पूर्व लघु प्रवृत्तियां।
3. मुख्यधारा के विषय के रूप में (प्रारम्भ से कक्षा 12 तक)।
4. पाठ्यक्रम सहगामी प्रवृत्तियां।

पाठ्य सामग्री

जीवन विज्ञान : एक परिचय, जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज की संरचना,

www.jvbharati.org

जीवन विज्ञान : शिक्षा का नया आयाम, शिक्षा जगत् के लिए जरूरी है नया चिन्तन, जीवन विज्ञान : शिक्षक प्रशिक्षक मार्गदर्शिका, जीवन विज्ञान : शिक्षक निर्देशिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान लघु पुस्तिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का केलेण्डर, जीवन विज्ञान : संस्कारमाला (नर्सरी से कक्षा 2 तक), बालक का व्यक्तित्व विकास और मूल्यपरक शिक्षा के प्रयोग, जीवन विज्ञान की रूपरेखा, जीवन विज्ञान पाठ्य-पुस्तकें : कक्षा 3 से 12 तक, सहशैक्षिक प्रवृत्तियों के लिए जीवन विज्ञान प्रश्न मंच एवं केरियर क्लब, संवादों में जीवन विज्ञान, जीव विज्ञान प्रायोगिकी आदि। (पाठ्य-पुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी सहित गुजराती, कन्नड़, तेलुगु आदि कुछ प्रादेशिक भाषाओं में भी उपलब्ध है।)

जीवन विज्ञान से लाभ

1. बौद्धिक और भावनात्मक विकास का संतुलन।
2. आवेग और आवेश का संयम।
3. आत्मानुशासन की क्षमता का विकास।
4. जीवन व्यवहार निश्छल एवं मैत्रीपूर्ण।
5. मादक वस्तुओं से सेवन से मुक्ति।
6. स्वस्थ जीवन जीने का मार्ग।
7. नैतिक मूल्यों का विकास।
8. पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ अच्छे ढंग से जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण।
9. जीवन की समस्याओं के समाधान की खोज।
10. स्व-शक्ति से परिचय एवं उसके उपयोग की दक्षता।

जीवन विज्ञान जारी है

1. राजस्थान, दिल्ली, कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा स्वीकृत एवं संचालन की अनुमति।
2. एन.सी.ई.आर.टी. पूना द्वारा सवीकृत प्रयोजना में जीवन विज्ञान सम्मिलित।
3. ए.आई.ओ.एस. के पाठ्यक्रमों में जीवन विज्ञान का छःमाही कोर्स प्रारम्भ।
4. बोकारो स्टील सिटी द्वारा संचालित सभी विद्यालयों में अनिवार्य विषय के रूप में जारी।

वार्षिक आयोजन

1. जीवन विज्ञान दिवस (23 नवम्बर 2011)
2. संस्कार निर्माण प्रतियोगिता
3. जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर
4. जीवन विज्ञान प्रशिक्षक सेमीनार

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें

जीवन विज्ञान अकादमी

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)

फोन : 01581-222119 फैक्स : 223280

ई-मेल : jeevanvigyanacademy@gmail.com

वेब-साईट : jeevanvigyan.org

तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्ट संस्थाएं

तेरापंथ विकास परिषद्
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन - 011-23231373 फे. 23231363
E-mail : tvp@terapanthinfo.com

जय तुलसी फाउण्डेशन
एक्सलैण्ड प्लैस, तीसरा तल्ला
कोलकाता - 17
फोन - 033-22902277,22903377
E-mail : jtfcal@gmail.com

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
महासभा भवन
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कोलकाता - 700001 (पश्चिम बंगाल)
फोन : 033-22357956, 22343598
E-mail : info@jstmahasabha.org

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्
प्रशासकीय कार्यालय
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन - 011-23210593
E-mail : abtyp1964@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
'रोहिणी' जैन विश्व भारती परिसर
पो. लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-222070

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 08094368313,08107451951
E-mail : tpfoffice@tpf.org
website : www.tpf.org.in

जैन विश्व भारती
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला. नागौर (राजस्थान)
01581-222080,222025,224671
E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com
Website : www.jvbharati.org

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर (राजस्थान)
01581-222230,222110
E-mail : office@jvbi.ac.in
Website : http:/www.jvbi.ac.in

अणुव्रतमहासमिति
अणुव्रत भवन, तीसरातल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-23233345, 23239963
E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन. 011-23236738, 23222965

अणुव्रत विश्व भारती
विश्व शांति निलयम्
पो. - राजसमंद - 313326 (राजस्थान)
फोन : 02952-220516, 220628
E-mail : rajsamand@anuvibha.in

राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान
चपलोत गली
राजसमंद - 313326 (राजस्थान)
फोन : 02952-202010,223100
E-mail : rass_rajsamand@rediffmail.com

आदर्श साहित्य संघ
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-23234641, 23238480
E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

पारमार्थिक शिक्षण संस्था
'अमृतायन' भवन
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-222032, 224305

अमृत वाणी
हिन्द पेपर हाउस
951, छोटा छिपावाड़ा
चावड़ी बाजार
दिल्ली - 110006
फोन : 011-23264782,23263906
E-mail : hindpaper@yahoo.com

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान
'शक्तिपीठ' नोखा रोड
पो. - गंगाशहर - 334401
जिला - बीकानेर (राजस्थान)
फोन : 0151-2270396
E-mail : gurudevtulsi@gmail.com

प्रेक्षा विश्व भारती
गांधीनगर हाइवे
कोबा पाटिया
गांधीनगर - 382009 (गुजरात)
फोन. 079-23276271,23276606
E-mail : prekshabharati@yahoo.com

अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर तेरापंथ स्मारक सुरक्षा समिति

प्रेक्षा फाउण्डेशन के अन्तर्गत तुलसी अध्यात्म नीडम, जैन विश्व भारती, लाडनूं में आयोजित आगामी प्रेक्षाध्यान शिविर -

फरवरी, 2012	-	12 से 19 फरवरी
मार्च, 2012	-	11 से 18 मार्च
अप्रैल, 2012	-	15 से 22 अप्रैल
मई, 2012	-	13 से 20 मई
जून, 2012	-	10 से 17 जून
जुलाई, 2012	-	8 से 15 जुलाई
अगस्त, 2012	-	12 से 19 अगस्त
सितम्बर, 2012	-	9 से 16 सितम्बर
अक्टूबर, 2012	-	14 से 21 अक्टूबर
नवम्बर, 2012	-	11 से 18 नवम्बर
दिसम्बर, 2012	-	9 से 16 दिसम्बर

- सम्पर्क सूत्र -

प्रेक्षा फाउण्डेशन

जैन विश्व भारती, लाडनूं - 341 306 (राजस्थान)

फोन : +91 1581 222119, मोबाईल : 9667280809

E-mail : foundation@preksha.com

Website : www.preksha.com

आचार्य श्री महाश्रमणजी एक महान् आध्यात्मिक व्यक्तित्व, विचारक और समाज सुधारक हैं। वे अहिंसा, अनुकम्पा, शांति और नैतिकता की प्रतिष्ठापना के द्वारा सामाजिक समरसता के लिए अविरल और अविराम परिश्रम कर रहे हैं।

श्रीमती प्रतिभा पाटिल, राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र

पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा समाज में किया जा रहा अहिंसा का कार्य प्रशंसनीय और प्रेरक है। मैं आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के अवसर पर शुभकामनाएं प्रेषित करता हुआ भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें सौ वर्ष की स्वस्थ आयु दें, ताकि वे मानवता और समाज की सेवा करते रहें।

पूज्य प्रमुखस्वामी, स्वामीनारायण संस्थान

मैं आचार्य महाश्रमणजी को प्रणाम करता हूँ जो अपने प्रेम और मानवता के प्रति अनुकम्पा के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी दयालुता उनके प्रेरक प्रवचन और वक्तव्य में झलकती है। आचार्य महाप्रज्ञजी उनके साथ अभिन्नता की अनुभूति करते थे।

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र

आचार्य श्री समाज सुधार व नैतिक सिद्धान्तों का ज्ञान दे रहे हैं। आचार्यजी सभी धर्मों का आदर तथा साम्प्रदायिक सद्भाव की हिमायती करते रहे हैं। उनका पावन संदेश हमारे समाज के लिए बहुत लाभदायक व प्रभावी है। उनकी शिक्षाओं से हम सबको सदैव प्रेरणा व दिशादर्शन मिलता रहेगा।

श्रीमती सोनिया गांधी, अध्यक्ष
कांग्रेस कमेटी

आचार्य श्री महाश्रमण सर्वधर्म समभाव, अहिंसा शांति सदाचार को व्यापक बनाने के साथ रूढ़ियों एवं सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन के लिए समर्पित भावना के साथ प्रयासरत हैं।

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री
राजस्थान

www.jvbharati.org

With Best Compliments From

Hukam Chand Nahata Foundation

Karan Singh Nahata

Ratan Lal Nahata

Moti Lal Nahata

Surendra Singh Nahata

Bhadra -Kolkata - Delhi -Noida - Hyderabad

AN ISO-9001:2000 CERTIFIED COMPANY

श्री TULSI

SWITCH GEAR PVT.LTD. NOIDA

e-mail : snahata@stsnoida.com, snahata_stsnoida@yahoo.com

www.jvbharati.org

सहज सरल जीवन की पोथी
बहुत जटिल अनुवाद हो गया।
आचार्य महाप्रज्ञ

स्व. मेघराज जी सामसुखा की पुण्य स्मृति में
शुभकरण सूर्यप्रकाश मनोज कुमार सामसुखा
गंगाशहर - लुधियाना

Manoj Palace
K.E.M. Road
Bikaner - 334401
Rajasthan
+91-151-2525048, 9414605401

Maravillosa
THE WONDERFUL T-SHIRT

Diksha Knitwears Pvt. Ltd.
B-32,139/2, Guru Vihar,
Rahon Road,Ludhiana
+91-161-3299879, 94179 44862
dikshaknitwears@gmail.com

सामसुखा परिवार, गंगाशहर

www.jvbharati.org

उच्च शिक्षा को समर्पित सर्व सुविधायुक्त मेवाड़ का अग्रणी शिक्षण संस्थान

आसीन्द में कल्पना से परे कार्य हुआ है। हमारा जब आसीन्द में पुनः आना होगा तो यह शिक्षा नगरी के रूप में अपनी पहचान बना चुका होगा।

आसीन्द — आचार्य महाप्रज्ञ

13 मार्च, 2008

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

विश्व के महानतम् दार्शनिक सन्त आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के आसीन्द को शिक्षा – नगरी के रूप में सुविख्यात करने के स्वप्न को साकार करने के लिए कृत संकल्पित

आचार्यश्री महाप्रज्ञ इन्स्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेन्स

महाप्रज्ञ नगर, आसीन्द - भीलवाड़ा (राज.) मोबाईल - 94141 15986 E-mail : asmie2012@gmail.com

रोशनलाल संचेती - अध्यक्ष

सुन्दरबाई भैरुलाल संचेती एज्युकेशन एण्ड वेलफेयर सोसायटी, भीलवाड़ा

13, हरि सेवा मार्ग, मिलन टॉकिज रोड़, भीलवाड़ा (राज.)

www.jvbharati.org

॥ अर्हम् ॥

शुद्ध हृदय में धर्म ठहरता है।

— भगवान् महावीर

मनुष्य की सोच हमेशा सकारात्मक होनी चाहिए।

— आचार्य महाप्रज्ञ

सहिष्णुता सफलता का सबसे बड़ा मंत्र है।

— आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

श्रीचंद, उम्मेद, विजयसिंह, अजय, अभिषेक, आशीष एवं तनिश मोहनोत

(डीडवाना निवासी, बैंगलोर प्रवासी)

Jay Group

Manufacturers & Exporters of
Plastic Tagging Pins, Loop Pins, Tagging Guns &
Texitile Spot Cleaning Guns under popular brands of :

ARROW® • Wonder® • TagStar® • UNIVERSAL® • CHOKHO®

No. 5 Charles Campbell Road, Cox Town, Bengaluru - 560005, Karnataka, India.
Tel. 0091 (0) 80- 25483928/25483508; Fax. 0091 (0)80-25488780/25484364;
E-mail@jaygroups. com; Website - www.jaygroups.com